

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15

अंक-17

दिसंबर-I, 2014

पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹ 8.00

सरगम और साज़ से बनी जीवन की 'बैलेंस शीट'



लखनऊ। सी.एम.एस. गोमती नगर ऑडिटोरियम में कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवाजी, आलोक रंजन, उनकी पत्नी सुरभि रंजन, अपर्णा यादव, जयंत कृष्णा तथा अन्य।

लखनऊ। विज्ञानस का हिसाब-किताब तो हम खूब रख लेते हैं... रिशनों के बहीखाते भी हमेशा नफ़े-नुकसान के ग्राफ पर तैयार रहते हैं। यह हिसाब लगा लेते हैं कि दूसरों ने हमें क्या दिया... यह ध्यान में कभी नहीं आता कि हमसे किसी को क्या मिला। अपने जीवन के इसी लेनदेन को 'बैलेंस शीट' को तैयार करने का ज़रिया है अध्यात्म। यह बताया गया प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक व आध्यात्मिक कार्यक्रम 'डिवाइन बैलेंस शीट ऑफ़ लाइफ' में। 'विबिधता में एकता' थीम पर आधारित इस कार्यक्रम

में किसी सत्यंग या प्रवचन से नहीं बल्कि रशियन धुनों पर हिन्दुस्तानी सरगम और साज़ों की जुगलबंदी से जीवन का सार समझाया गया।

सी.एम.एस. गोमती नगर विस्तार के ऑडिटोरियम में संगीत और अध्यात्म के अनांखे संगम की शुरुआत हुई रशिया से आये 30 कलाकारों के 'डिवाइन लाइट गुप' की रशियन बैले प्रस्तुति से। इसके बाद 'हम स्वर्ग धरा पर लायेगे...' गीत पर बैले और भरतनाट्यम का संगम अद्भुत था।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच में ब्रह्माकुमारी संतोष ने जीवन में अध्यात्म



कार्यक्रम में डिवाइन गुप के रशियन कलाकार प्रस्तुती देते हुए।

में ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मशहूर वक्ता ब्रह्माकुमारी शिवाजी ने जीवन के संवाद और परमात्मा के ज्ञान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि विश्व-विद्यालय की 'राजयोग प्रक्रिया' ध्यान के जरिये आत्मा और परमात्मा के से संवाद होने की स्थिति है। आत्मा रिचार्ज होती है। वे निजी शक्तियों से शक्ति महसूस करती हैं। विश्व-आर और ध्यान की महत्ता बताई और विद्यालय की लखनऊ शाखा की प्रभारी

ब्र.कु.राधा और विश्व विद्यालय के माउण्ट आबू हेडक्वार्टर से आये ब्र.कु.कोमल कार्यक्रम संयोजक की भूमिका में थे। इस कार्यक्रम में शहर की कुछ चर्चित हस्तियों ने मिलकर तकरीबन 100 दीपक एक साथ जलाये। प्रमुख रूप से मुख्य सचिव आलोक रंजन, उनकी पत्नी सुरभि रंजन, अपर्णा यादव, जयंत कृष्णा, जगदीश गांधी ने दीपक जलाये। कार्यक्रम के अंत में अपर्णा यादव ने कहा कि अनेकता में एकता का यही मंत्र था जिसके बल पर गांधी जी देश को आजाद करा ले गए।

विश्व-बंधुत्व दिवस पर वर्ल्ड रिकॉर्ड



शांतिवन-डायमण्ड हॉल। दादी रतनमोहिनी सहायक प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, को 25 अगस्त विश्व-बंधुत्व दिवस पर वर्ल्ड रिकॉर्ड का प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित करते हुए अध्यक्ष पवन सोलंकी। साथ हैं ब्र.कु. मृत्युंजय, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज, ब्र.कु. गंगाधर, सम्पादक, ओमशान्ति मीडिया।

शांतिवन - पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि के सातवें स्मृति दिवस 25 अगस्त को विश्वबंधुत्व दिवस रूप में मनाया गया। जिस पर विशेष रूप से भारत तथा नेपाल में 'दादी प्रकाशमणि रिकॉर्ड ऑफ इंडिया में दर्ज किया गया।

योग मन के परिवर्तन की एक अवस्था है - मा.जीजिंग

ओ.आर. सी. गुडगाँव। वास्तव में यह एक ही अनांखा विश्व-विद्यालय है, जो विश्व को आध्यात्मिकता की शिक्षा दे रहा है। यहाँ का बड़ा सुन्दर आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक वातावरण हमें जीवन से भी पार ले जाता है। धर्म

तो वास्तव में एकमात्र बाह्य स्वरूप है, लेकिन आध्यात्मिक रूप से तो सब एक ही हैं। जैसे पेड़ की पत्ती, फूल, फल एवं शाखायें अलग-अलग हैं, उनके धर्म अलग नजर आते हैं, परंतु ये सभी जुड़े तो एक जड़ से ही हैं। मुझे बौद्ध धर्म में

कुछ मिसिंग लगता था जिसका कि मुझे यहाँ आकर अनुभव हुआ, वास्तव में परमात्मा ही ऊर्जा का एकमात्र स्रोत है। हमें सब पर दया करनी है, सारे ब्रह्माण्ड में बस प्यार के ही प्रकल्पन फैलाने हैं। दया एक ऐसा सुन्दर - शेष पेज 8 पर



'द पावर ऑफ कर्मशन' विषय पर ब्र.कु.आशा सम्बोधित करते हुए। साथ में हैं बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध योगी मा.जीजिंग।

... तुम वही हो जाओ, जो तुम होने को आये हो ...

जीवन जैसे-जैसे थोड़ा झुकता, जैसे-जैसे अहंकार थोड़ा-थोड़ा गलता, जैसे-जैसे अंधेरी रात में भी उसकी विजलियां कौंधनी शुरू हो जाती हैं। आप ही दुनिया के इंसका आना शुरू हुआ नहीं! आप ही बाधा हो, आप ही दोहरा बनकर खड़े हो, आप गिर जाओ, उसका खुला आकाश सदा से ही मुक्त है।

परमात्मा दूर नहीं है, आप अकड़ खड़े हो, आपकी अकड़ ही दूरों है। आपका झुक जाना ही निकटता हो जाएगा। वैसे शास्त्रों में भी कहते हैं परमात्मा दूर से दूर और पास से पास है। दूर, जब आप अकड़ जाते हो। दूर, जब आप कहते हो मैं ही हूँ, तू नहीं है। पास, जब आप कहते हो तू ही है, मैं नहीं हूँ। जब आप आँख खोलते हैं। जब आप अपने पात्र को... अपने हृदय के पात्र को... उसके सामने फैला देते हो, तब आप भर जाते हो, हज़ार-हज़ार खज़ानों से।



-डॉ. कृ. कृ. गंगाधर

प्रभु तो रोज़ ही आ सकता है। आता ही है। उसके अतिरिक्त और कौन आयेगा? जब आप नहीं पहचानते, तब भी वही आता है। जब आप पहचान लेते हो, धन्य भाग्य! जब आप नहीं पहचानते, तब भी उसके अतिरिक्त न कभी कोई आया है और ना कभी आयेगा। वही आता है। क्योंकि सभी की शक्तें उन्होंने ही बनाई हुई हैं। सभी उनकी ही रचना हैं। सभी को उसने ही बनाया है। सभी को अपने नयन कमलों से सजाकर कर भरपूर किया है। तो अगर कभी एक बार ऐसे प्रतीती हो कि अंगमन हुआ है, तो उस प्रतीती को गहराना, सम्भालना, उस प्रतीती में उसका, सुरीत बनाना। फिर और धीरे-धीरे कोशिश करो और उस प्राप्त प्रेम को पहचानो, बांटो। उसी भाव से सबको देखने का यत्न करो।

पुरानी कहावत है, अतिथि देवता है। अर्थ है कि जो भी आये उसमें परमात्मा को पहचानने की चेष्टा जारी रखनी चाहिए। चाहे हज़ार बाधाएँ आये, चाहे कठिनदयों आये, चाहे कितनी भी गालियाँ खानी पड़े, चाहे कितनी भी मुश्किलें आये, तब भी आप समझना कि वो वही है। दोस्त में तो दिखाई पड़ेगा ही लेकिन शत्रु में भी वही दिखाई पड़े, अपनी में तो दिखाई पड़ेगा ही लेकिन परायों में भी दिखाई पड़े। रात के अंधेरे में ही नहीं, और जितने पदचाप आपको उसके सुनाई पड़ने लगे उतनी ही पंखुरियाँ तो आपको खुलने लगेंगी।

चमन में फूल खिलते तो सभी ने देख लिये, सिसकते गुँचे की हालत किसी को क्या मालूम? रोती हुई कलि की हालत, और कलि तभी फूल हो सकती है जब अनंत के पदचाप उसे सुनाई पड़ने लगे। आप अपने से फूल न हो सकोगे। सुबह जब सूरज उगता है, और सूरज की किरणों नाच उठती हैं आकर कलि की निकटता में, सामीप्य में... कली के ऊपर... जब सूरज की किरणों के हल्के-हल्के पद कलि पर पड़ते हैं, तो कलि खिलती है, फूल बनती है। जब तक तुम्हारे ऊपर परमात्मा के पदचाप पड़ने लगे, उसके स्वर आकर आघात न करने लगे, तब तक आप कलि की तरह ही रहोगे।

कलि की पीड़ा यही है कि खिल नहीं पाई। जो हो सकता था, वह नहीं हो पाया। नियति पूरी न हो, यही संताप है, यह दुःख है। हर आदमी की पीड़ा यही है कि वह जो होने आया है, नहीं हो पा रहा है। लाख उपाय कर रहा है- गलत, सही; दौड़-धूप कर रहा है, लेकिन पाता है, समय बीतता जाता है और जो होने को मैं आया हूँ वह नहीं हो पा रहा हूँ। यह जो तुम वही न हो जाओ जो तुम होने को आये हो तब तक संतोष असम्भव है। स्वयं होकर ही मिलता है परितोष।

तो सुनो, प्रभु के पदचाप जहां से भी सुनाई पड़ जायें। और धीरे-धीरे सब तरफ से सुनाई पड़ने लगेंगे। जिस दिन हर घड़ी उसी का अनुभव होने लगे कि वह जो ग्रहण पर छड़ा है, वही सामने है, उस क्षण फूल खुल जाता है। वह जो सुनाए आप अपने भीतर लिये हो, अभिव्यक्त हो जाती है। वही अनुग्रह है, उत्सव है, अहोभाव है। परमात्मा को मालूम है आपकी हालत के बारे में। जब आप होते हो सब तरफ, कहीं सुराग नहीं मिलता; टटोलते हो सब तरफ और चिराग नहीं मिलता; और जिनदुर्ग प्रतिफल बीतती चली जाती है, हाथ से प्रत्येक क्षण सिसकते चले जाते हैं, जीवन्त की धार बही चली

-- शेष पेज 6 पर

जो एक्चूरेट है, वही निमित्त है, वही सैम्पल



डॉ. श्री. जितेंद्र प्रसाद

ओम् शांति, किनाता मीठा लगता है, किनाता प्यारा लगता है। मेरा बाबा प्यारा बाबा या मीठा परिवार, प्यारा परिवार कहें... फिर मैं कहाँ जाऊँ क्या करूँ? तो पहले मेरा बाबा, फिर मीठा बाबा फिर प्यारा बाबा और मीठा परिवार, प्यारा परिवार... एक-एक इतना मीठा लगता है, तब तो मैं खैर करके आ जाती हूँ। राइट टाइम पर राइट टचिंग आवे, यह है इस्टरूमेट का काम। कोई भी इस्टरूमेट होगा बनाने वाला तो बना देगा, उसको यूज़ करना, चलाने वाला कोई साधारण नहीं चला सकता, यह इस्टरूमेट ऐसा है। मैं इस्टरूमेट हूँ, ऐसा लायक सबके आगे हाज़िर होने के लिए किसने बनाया? इन्होंने इस्टरूमेट क्या बोले! मुझे चलाने वाला वो है ना। कैसे चल रही हूँ, बनाने वाला वो है ना। ऐसी फीलिंग जो है बड़ा न्यारा और प्यारा बना देती है। जैसे बाबा ने कहा एक-एक शब्द दिल को लगता है। इस्टरूमेट माना न्यारा और फिर बड़ा प्यारा लगता है।

इस्टरूमेट माना सिम्पल और सैम्पल। पुराने ज़माने की बात है, बड़े-बड़े बिज़नेसमैन सैम्पल दिखा करके बिज़नेस करते थे। एक सैम्पल दिखायेंगे और कहेंगे इतने दाम में मिलेगी, तो उनका वो बिज़नेस बहुत अच्छा चलता है। तो वह बिज़नेसमैन इतने अच्छे होते थे, कहीं और जाकर नहीं चलाते वही जाते थे। जैसे हमारे ब्रह्माबाबा का कलकत्ते की मार्केट में बहुत अच्छा दुकान था, ऐसा अच्छा बिज़नेस था, कोई भी ग्राहक बाबा को छोड़ दूसरी जगह नहीं जायेगा। तो जिस इस्टरूमेट में सच्चाई और प्रेम है तो वह

बेफिक्र हो शांति और रूहानियत से, ठाठ से अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इस्टरूमेट माना सच्चा सेवाधारी। जो एकदम त्यागी, तपस्वी। कोई भी बात के त्याग की कमी है तो तपस्वी नहीं होगी। याद, योग, तपस्वी में अन्तर है। बाबा को याद करे तो अच्छा है। बाबा रोज़ मुरली में कहता है याद करो, याद करो। इसके लिए देहाधारियों को याद नहीं करो, देह के सम्बन्ध से न्यारे बनो, मतलब याद के लिए पुरुषार्थ है। फिर योग इसमें बुद्धि बड़ी अच्छी हो जिसमें ऐसी ज्ञान की धारणा हो, क्योंकि ज्ञान सिर्फ सुनने और सुनाने के लिए नहीं है। सुनते धारणा हो, धारणा होने से ज्ञान सुनाने वाले से योग लग जाता है। योग करना नहीं पड़ता है, योग लग जाता है। योग बल मिलता है फिर नैसुरल तपस्वी मूर्त बन जाते हैं, जैसे बाबा मम्मा। देखना हो तो बाबा मम्मा को देखो, हमारे सभी पूर्वजों को देखेंगे तो सब त्यागी तपस्वी हैं। आज भी इन्हीं के फोटो देखने और याद आने से एक रौनक आ जाती है। जैसे देखो, परदादी नाम लेते ही सारे इस्टरूमेट जोन की सेवा याद आ जाती है। परदादी में विश्व को भी एक ऊपर करते हैं। जब वे विदेश में आई थीं तब परदादी के सामने यह गीत बजा था - रचना जिसको इतनी सुन्दर, वो रचता कैसे होगा...। तो हमारे जो पूर्वज हैं उनकी दुआती भी एक ऊपर रहते हैं। हमारी पीढ़ी खुद बोलती नहीं थी मेरे को कहती थी तुम यह बोलो, तुम यह बोलो... हर बार मुझे आगे बढ़ाती रही। जो बाबा ने बताया है वह स्पष्ट करो। दीदी ने ही सिखाया है - याद में भोजन करो, टैफिक कंट्रोल ठीक

से करो। उसका प्रमाण है कि अभी हम कभी अलबेले नहीं हो सकते हैं। अगर अभी भी कोई अलबेले है तो वे राइट इस्टरूमेट नहीं है। दीदी को टाइम का कदर बहुत था। एक्चूरेट क्लास में आना, सुबह और शाम के योग में भी एक्चूरेट। निमित्त बनाओ तो एक्चूरेट की मिसाल बनो। तो अच्छा सैम्पल बनने से अच्छा बिज़नेस हो जाता है, माना औरों में उमंग-उत्साह पैदा होता है। परिवर्तन हो तो ऐसा एक्चूरेट, कोई कमि न दिखाई पड़े, वो तभी होगा जब हमको किसी की कमी दिखाई नहीं पड़ेगी। मुख्य कमी यह है, जो मुझे किसी की कमी दिखाई पड़ी। बहुत-बहुत ज़रूरी है कमी नज़र न आवे। कमी देखो तो यह मेरा डिफेकट हो जायेगा, फलाना ऐसा करता है, देखा... क्या बोला? किसने बोला? अपना मुँह देख, मुछड़ा देख ले प्राणी दर्पण में... इसलिए कभी इधर-उधर न देखो, मेरा बाबा इतना रहमदिल है, बाबा में इतना दया भाव और क्षमा भाव है। दीदी भी आत्मा होगी तो भी करता है, अच्छा बच्चे... ठीक हो जायेगा। बाबा कभी नहीं कहेंगा यह क्यों किया? पास्ट इज़ पास्ट। बाबा से इतनी अच्छी-अच्छी बातें देखा सैखने को मिली है। मम्मा को भी कहेता है, मम्मा ऐसे करेवशन नहीं देती थी, बाबा दे देता था, मम्मा नहीं देती थी। यह सब अनुभव इसलिए सुनाया जाता है, अनुभव करो ना। तो अच्छे अनुभव से जो हमारे में कमी है, खलास हो जाती है।

जिनका संकल्प "हम पास होंगे" वही बाबा के पास होंगे



डॉ. श्री. जितेंद्र प्रसाद

परमात्मा से आर्पावांदा कैसे पाए कर सकते हैं?

आज दिन तक भी भागवत में हमारे जीवन का गायन है, जो पा रहे हैं और हम चल रहे हैं। शांति भी दो प्रकार की होती है। एक है सोच की शांति, दूसरी है ज्ञान के स्थिति की। अंदर से सभी जानते हैं कि मेरी स्थिति कैसी है। एक सेकेण्ड जो बीता वह बीता। बाबा से वायदा करो कि हम आप जैसा बनेंगे, जो खिलायेंगे, जहाँ बिठायेगे, जैसा चलायेंगे वह करेंगे। पेपर आना माना स्वयं का पक्का होना है। दिल्ली वाले राज्य तैयार करने वाले हैं, हमारी ड्यूटी है सतयुग में सबको सेटा करके की। हम सबको ऐसा योया बनायेंगे जो सतयुगी देवतायें तैयार हों। हमारी जीवन ऐसी है जो दुःख-अशांति फील नहीं होती। रोज़ अमृतवेले बाबा की शाबाश लो कि बाबा मैं कल भी ठीक रही और आज भी ठीक रहूँगी।

प्रश्न - दादी जी, हमारे प्रति अपने दिल की आशा बताइये?

उत्तर - कोई भी प्रॉब्लम नहीं बना, बॉम्बम

मिटाने वाले बने। टीचर्स निमित्त है सबको उड़ाए वाली, यही हमारी ड्यूटी है। आज से बाबा को यही रिजल्ट देंगे कि बाबा दिल्ली पास है। हमारे फ्रेंड को मान तो रखेंगे ना। बाबा मदद करता है, नाजूक को भी ठीक कर देता है। दिल से बाबा कहो, वह हमारे लिये बंधा हुआ है। बाबा को एक मास का रिपोर्ट दिखाना है कि आप सामन रहूँगी और विकास बूनेंगी। बाबा कई दिल्ली वालों ने जो वायदा किया वो निभाया है। दिल्ली करेगा तो औरों में भी उमंग आयेगी। आप सभी हमारे दिल को साधी हो। बाबा अपने मुख से कह कि दिल्ली पास। मैं औरों को भी आगे बढ़ाना है। सारे विश्व का कल्याण करना है। बातें तो आयेगी हम लक्ष्य रखें कि हम पास होंगे। संकल्प में भी पास। आगे हमारी कोई कमजोरी की रिपोर्ट ना हो।

प्रश्न - दादी जी, आप टीचर्स को किस स्वरूप में देखना चाहती हैं?

उत्तर - सन्तुष्टपणि के रूप में। आप सब तो जानती हो कि सन्तुष्टता क्या होती है? आज से संकल्प करो कि सन्तुष्टपणि हूँ, बाबा के गले का हार हूँ।

प्रश्न - दादी, बाबा कहता है, पारस को छुने से भी लोहा पारस हो जाता है, अगर

हमारी स्थिति पारस जैसी बनी है तो हमारे आजू-बाजू रहने वालों में कुछ तो चेंज दिखाई देना चाहिए?

उत्तर:- उसमें फिर इतनी पॉवर चाहिए जो उस तक पहुँचे। अभी तक इतनी पॉवर नहीं है जो उस तक पहुँचे। अपने तक तो ठीक है, खुद बना है लेकिन इतनी पॉवर नहीं है जो दूसरे तक भी पहुँचे। इसकी ऐंसेरल अटेन्शन देना पड़ेगी। अगर उससे आपका कनेक्शन होगा और वह भी समझता है कि यह पॉवरफुल है, इसका मेरे को मिल सकता है, तभी तो होगा ना। ऐसे ही आप उसको दे रहे हो, उसको भावना ही नहीं है, तो वह कैसे चेंज होगा।

प्रश्न:- जैसे कहावत है दिया के तले अंधेरा, ऐसे कभी-कभी महसूस होता है, हम संकल्प करते हैं लेकिन वह अंधेरा दूर नहीं हो पाता है?

उत्तर:- उसके लिए बहुत पॉवरफुल योग चाहिए, क्योंकि उसके संस्कार बहुत कड़े हैं, उसके लिए फिर कॉमन योग नहीं चलता। ऑफीशियल पॉवरफुल योग, विशेष-फिरते उसको देते हैं, वह हमारे अटेन्शन में रहे, मुझे यह करना ही है तो फिर हो जायेगा।

कमर कस, अधीरता को छोड़, वीरता को धारण करो

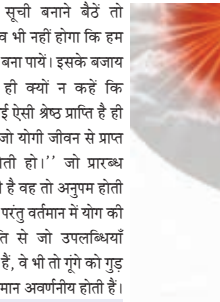
जीवन एक यात्रा है; हरेक को अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचने का ध्यान तो रखना ही चाहिए। दूसरे शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि हरेक को अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए तदनुसार लक्षण तो धारण करने ही चाहिए अथवा वांछित सिद्धि प्राप्त करने या सिद्धि स्वरूप बनने के लिए हरेक को साधना तो करना ही चाहिए। जब संसार में अंगमत्त उपलब्धियों को एक ओर रखकर योगी ही बनने का किसी ने व्रत लिया तो उसे योग की सूक्ष्मता, गहराई, ऊँचाई या सिद्धि तक पहुँचने का पूरा यत्न तो करना ही चाहिए। आधा मर कर काम करने से क्या लाभ? उसाह और उमंग ही यदि साथ न रहे तो एक किलो वजन भी एक क्विंटल महसूस होता है। अतः परिस्थितियों से जुझ पड़ना ही वीरता है और कमर कस काम करने में ही सफलता है। योग से जो लाभ होते हैं, उनको

होता है परंतु व्यर्थ संकल्प रूपी 'कुत्ता' आकर उसकी बनायी हुई धारणा ही चट करने लग जाता है। अतः जरूरत इस बात की है कि मनुष्य जैसे ही परमपिता परमात्मा का 'ध्यान' करे वैसे वह तत्सम्बन्धित आवश्यक बातों पर भी ध्यान दे ताकि न केवल वह योगाभ्यासी ही बना रहे बल्कि वह 'योगी जीवन' बाला भी हो। इसलिए निम्नलिखित दो-तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं:-

सीखने की प्रवृत्ति और नम्रता

आध्यात्मिक जीवन में प्रगति रुक जाने का एक बहुत बड़ा कारण है-धीरे-धीरे सीखने की प्रवृत्ति का मन्द पड़ जाना। जब व्यक्ति योगी जीवन के पथ पर पग धरता है तब प्रारंभ में तो उसे एक धुन-सी लग जाती है। जीवन को पलट डालने के लिए वह उत्साही हो उठता है। उसके मन में यह सकल्प समर्थ बन जाता है कि योग के

यदि सूची बनाने बैठें तो सम्भव भी नहीं होगा कि हम सूची बना पायें। इसके बजाय ऐसा ही क्यों न कहें कि 'कोई ऐसी श्रेष्ठ प्राप्ति है ही नहीं जो योगी जीवन से प्राप्त न होती हो।' जो प्रारम्भ बनती है वह तो अनुपम होती ही है परंतु वर्तमान में योग की स्थिति से जो उपलब्धियाँ होती हैं, वे भी तो गूंगे को गुड़ के समान अवर्णनीय होती हैं।



गति मंद क्यों?

परंतु यह सब जानते हुए भी योगी अपने पथ पर चलते-चलते स्वल्प ही प्रगति क्यों कर पाता है? उसकी गति मंद क्यों हो जाती है? अपार प्राप्ति के मार्ग से हटकर वह रुक क्यों जाता है? वह कभी-कभी पीछे हटने लग जाता है? योगी जीवन का जो श्रेष्ठ और रसोला अनुभव है, उसको कभी क्यों महसूस करने लगता है? प्रभु की ओर बढ़ते-बढ़ते वह मार्ग 'खो' क्यों बैठता है? यह तो एक अथाह हानि हो जाती है। पुरुषार्थों अर्थात् मंद गति के कारण ही बताया रहता है, अपनी धीमी प्रगति होने का, सपटीकरण ही देता रहता है परंतु इसी बीच ऐसी अपार हानि हो जाती है कि फिर पछलने से उसकी क्षति-पूर्ति तो हो नहीं सकती। लोग योगी को यम, नियम... और प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का अभ्यास करने के लिए कहते हैं और योगी भी मन में परमपिता परमात्मा का 'ध्यान' करने तथा यम-नियमों का पालन करने का पुरस्कार का ख्याल रखता है, परंतु दो-तीन बातों का ध्यान न रखने से धीरे-धीरे यम-नियम भी ढीले होने लगते हैं और परमपिता परमात्मा में भी ध्यान नहीं लगता। अतः मन में परमात्मा का 'ध्यान' करने के साथ-साथ दो-तीन महत्त्वपूर्ण बातों को और ध्यान देना भी जरूरी है वरना स्थिति परिपक्व नहीं हो पाती। किसी ने कहा है- 'आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा।' एक माता अपनी पड़ोसियों के साथ ढोल बजा कर कोर्तन करके शान्ति प्राप्त करने के यत्न में लगी थी; उसका ध्यान हटा देख कर कुत्ता उसकी सभी रोटियाँ ही हजम कर गया! ऐसे ही मनुष्य तो टेरा-फिकाई और कैसैट रूपी आधुनिक ढोल पर गीत बजा कर परमात्मा का ध्यान करने का बल कर रहा

उच्च शिखर पर चढ़ जाता है। परंतु जब वह कुछ सीख जाता है, थोड़े-बहुत अन्य लोगों से आगे भी निकल जाता है या उसे योग के कुछ अच्छे अनुभव भी हो जाते हैं, तब वह स्वयं को अनुभवी या योग में शिक्षित मान कर चलने लगता है और आगे सीखने में उसकी पूर्ववत् रुचि नहीं रहती। उसका एक कारण यह भी होता है कि वह दूसरे योगाभ्यासियों में कई बार कोई जलवा नहीं देखता बल्कि उन्हें भी कहीं-न-कहीं रुका हुआ देखता है या वह स्वयं को ही समझदार मानकर दूसरों से योग-चर्चा करने, अनुभव का लेन-देन करने, उनसे अपनी प्रगति के लिए कुछ प्रकाश पाने का कामना ही नहीं करता। सूक्ष्म रूप में उसमें एक अहंकार-सा होता है जिसका कई बार उसे पता भी नहीं रहता। वह अब यह भी नहीं सोचता कि अब यदि शरीर छूट जायेगा तो क्या गति होगी? क्यों न किसी वरिष्ठ योगी से कुछ और लाभ ले लें? जीवन के कार्य-क्षेत्र में वह भी कार्यकुशल होने से स्वयं को सर्व प्रकारोंकुराल ही मानने लग जाता है और अपनी कमियों को छिपा कर, दबा कर या यों ही एक ओर कर के रख लेता है। वह सोचता है कि 'कमियाँ तो सभी में हैं।' इस प्रकार स्वयं को 'तीस मार खान' मान कर वह इतना तो गर्व के गर्त में धंस जाता है कि यदि उसे कोई हित-कामना कर के दरदल से निकालना भी चाहे तो वे उसे अपने से भी कम श्रेणी का या सम-श्रेणी का मानकर उसको नसीहत को ही उड़ा देता है। परिणाम यह होता है कि पहले तो कोई, चाहे उससे वरिष्ठ ही क्यों न हो, उसे कुछ हित-मंगल की बात कहने में ही सकुचाता है; यदि वह उसे कह भी दे तो वह उसे 'हस्तक्षेप', 'अनाधिकार

चेष्टा', 'अनुचित' या 'व्यर्थ की बात' मानता है। वह या तो समझता है कि 'यह बात तो मुझे भी मालूम थी, यह कौन सी नई बात है?' अथवा 'यह कमजोरी तो सभी में है, केवल मुझ में थोड़े ही है,' या कि 'केवल मुझे ही यह शिक्षा क्यों दी जाती है?'; मुझे समझाने वाला पहले अपनी भूल तो ठीक करे...'

इस प्रकार की सारी प्रतिक्रिया सूक्ष्म अभिमान की ही कोपलें, कांटे और जहरीले पत्ते ही होते हैं। परंतु वह इन्हें ही अपनी बुद्धिमत्ता मानकर सदबुद्धि के मार्ग पर आगे अनुभव पाने से वंचित रह जाता है।

इसलिए कहा गया है कि नम्रता के बिना मनुष्य सीख नहीं सकता और कि जो सीखना ही नहीं चाहता, मानो कि वह बुद्धा हो गया है; उसकी युवावस्था ही समाप्त हो गयी है। जब कोई सीखना ही बंद कर देता है तो उस बुद्धि का विकास कैसे होगा? अतः अध्यात्म के पुरुषार्थों का सब से पहले तो इस बात पर ध्यान होना चाहिए कि अभी और बहुत कुछ सीखना है। जिससे भी कुछ अच्छी बात मिले, उसे अवश्य धारण करना है। यह सारा जीवन ही अन्त तक सीखने के लिए है।

गुणग्राहक वृत्ति में कमी

सीखने का एक तरीका तो यह है कि जिससे भी हमें कोई अच्छी बात सुनें और समझने को मिले उसको हम अपने अभिमान में आकर या कोई-न-कोई व्याख्या देकर उसका तिरस्कार न कर दें बल्कि बताने वाले का भी हार्दिक धन्यवाद करके कहें कि हम इस बात पर ध्यान देंगे और सही अर्थों में हम इस बात पर ध्यान देंगे। दूसरा तरीका यह है कि यदि हमें मौखिक रूप से कोई ऐसा ज्ञान-मोती या गुण-रत्न नहीं भी देता है तो हम वैसे भी व्यवहार में हरेक से गुण लें और उसके गुण की कभी चर्चा भी करें। यदि हम गुण नहीं लेंगे तो अवगुण लेंगे और उसके तो पतन ही होगा, प्रगति तो नहीं होगी। किसी के अवगुण देखने पर भी हम कुछ तो सीख रहे ही होंगे परंतु उल्टा सीख रहे होंगे। इस से पुरुषार्थ की गाड़ी आगे बढ़ने की बजाय पीछे ही हटोगे।

टाल मटोल करने की आदत

हमारी प्रगति न होने का एक कारण यह भी है कि हम यह मान कर चलते हैं कि आगे चलकर हम अपने संस्कारों को बदल लेंगे, परिस्थितियाँ ही ऐसी आयेंगी जो सभी बदलेंगे; तब हम भी तो बदलेंगे ही। कुछ समय के बाद, जब हमारी अमुक परिस्थिति बदल जायेगी तो हम खूब योग साधेंगे। हम ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करेंगे कि सभी देखते ही दंग रह जायेंगे। इस प्रकार के सोच में 'इस प्रकार स्वयं को 'तीस मार खान' करता जाता है और परिणाम यह होता है कि समय हाथ से निकल जाता है। अतः इस बात की ओर भी ध्यान देने की जरूरत है कि समय हाथ से न निकल जाये, जो करना है उसमें हम टालमटोल न करें वरना यह आलस्य और अलबेलापन बहुत ही हानिकर है। यदि हम इन बातों पर ध्यान देंगे तो परमपिता परमात्मा में ही हमारा 'ध्यान' लगेगा ही।



बेलगाम-कर्नाटक। सांसद सुरेश कुमार अंगडी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. अम्बिका।



मोहम्मदी-खीरी। नगरपालिका अध्यक्ष दुर्गा महरोत्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. अनुराधा तथा ब.कु. लवली।



कन्नौज-सिपाही ठाकुर मोहल्ला। साधवी बहन विपठी जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. पुनम। साथ हैं ब.कु. रेखा।



आणंद-गुज। 'इनर लीडरशिप' विषय पर सेमिनार के पश्चात् समूह चित्र में अमूल डेयरी के एम.डी. के. रतनम, जी.एफ. जे.के. जोशी, मैनेजर, ब.कु. गीता, ब.कु. दीपा, मुम्बई तथा अन्य।



नवसारी-गुज। चैतन्य देवियों की ज्ञांकी का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब.कु. गीता। साथ हैं ब.कु. राजयोगिनी।



जसपुर। सी.आर.पी.एफ. में कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. सरिता, ब.कु. संजू तथा अन्य।



सासाराम-विहार। स्वास्थ्य मंत्री रामधारी सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. बनिता। साथ है सिविल सर्जन अशोक कुमार तथा ब्राह्मण सोसायटी के चेयरमैन निर्मल दूबे।



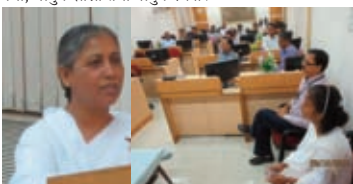
कोरवा-छ.ग। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. राम प्रकाश, न्यूयॉर्क, विधायक प्रहलाद गुजल, अतुल खार, ब्र.कु. उर्मिला, कोटा तथा अन्य।



झज्जर। एस.एम. भुक्ल बहन को ईश्वरीय वरदान तथा प्रसाद देते हुए ब्र.कु. सन्तोष।



बुलंदशहर-यमुनापुरम। महावीर सिंह, प्रेसिडेंट, बुलंदशहर खुरजा डेवलपमेंट अथॉरिटी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. शोला तथा ब्र.कु. रचना।



धुवनेश्वर-बी.जे.वी.नगर। एस.बी.आई. के ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ब्र.कु. तपस्विनी।



झांलावाड़। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. राम प्रकाश, न्यूयॉर्क, डॉ. सुपना पाण्डे, जिला शिक्षा अधिकारी सुरेंद्र सिंह गौड़, एडवोकेट विष्णु प्रसाद पाटीदार, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

दूध का प्रभाव व स्वास्थ्य

अपनी माँ का दूध अमृत दूसरे की माँ का दूध रोग कारक-

शैशव अवस्था के बाद प्रकृति द्वारा जल के सिवाय कोई भी तरल पदार्थ मानव के लिए नहीं रचा गया है:

2. शिशु अवस्था में दूध को हजम करने वाली पाचन प्रणियाँ लुप्त होकर ठोस आहार पाचन करने वाली बन जाती हैं इसलिए शिशु अवस्था के बाद दूध का पाचन अच्छी तरह हो ही नहीं सकता। हम लोग दूध पीने को कोशिश करते हैं तो उन्हें अपन, गैस, कब्ज, पेशिया, चुकाम या श्लेष्मा सम्बन्धी बीमारियों से जूझना पड़ता है।

3. दूध जितना अधिक उबलता है उतना ही जहरीला और दुग्धाच्य हो जाता है। कोई भी दूध स्तन से सीधे शिशु के मुँह में जाना चाहिये। हवा के सम्पर्क में आते ही इसमें कोटाणुओं की वृद्धि होने लग जाती है। एक घंटे के भीतर एक लाख से अधिक कोटाणु पनप जाते हैं और दूध सड़ने की ओर बढ़ जाता है। हम मर्क कर इन पनपते हुए

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर



ब्र.कु. ललित शांतिवन

कोटाणुओं को तो जलाते ही हैं साथ में दूध के पाचक एंजाइम्स (म्राण तत्व) तथा पोषक तत्वों, मित्र कोटाणु, विटामिन्स को भी नष्ट तथा विकृत कर देते हैं। प्रोटीन और चर्बी दुग्धाच्य हो जाते हैं। इस तरह बार-बार पनपते कोटाणुओं को उबाल-उबाल कर हम दूध को मुँह कोटाणुओं का सूप बना देते हैं जो दूध से हम कभी अलग नहीं करते। यही मुदाँ कोटाणु तथा विकृत दूध दुग्धाच्य और रोगकारक हो जाते हैं। मुँह कोटाणुओं का यह सूप पीकर हम फिर शाकाहारी कहलाते हैं।

4. दूध की वसा, अत्यधिक कैल्शियम तथा प्रोटीन हमारी खून की गलियों में जमा होकर हार्ट-अटैक, गुँदों के पथरी, संघिवात, जोड़ों के दर्द आदि विविध रोगों का बहुत बड़ा कारण बनता है। पशु दूध मनुष्यों के लिए अग्राह्य है क्योंकि इसके प्रयोग से शरीर की धमनियों में कैल्शियम की मात्रा बढ़ जाने से

वे असमय ही बूढ़े हो जाते हैं और जल्दी मर जाते हैं।

लखनऊ के सिरताज भाई, उम्र-70 वर्ष पिछले 40 वर्षों से कोलाइटिस से पीड़ित थे जिससे गैस बनना, कब्जियत, भूख न लगना आदि समस्याएँ आए दिन परेशान करती थी एवं 3 वर्षों से ऑस्टियो-पोरासिस के कारण हाथों की अंगुलियों के जोड़ों एवं कलाई में दर्द रहता था, 3 किलो वजन भी नहीं उठा सकता था। 1-9-2013 से स्वर्णिम आहार पद्धति का प्रयोग शुरू किया और अब सबकुछ ठीक है।

तो आइये, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इन गोली-दवाई-इन्जेक्शन-बीमारी-असताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

अधिक जानकारी - सदा स्वस्थ जीवन पुस्तक और डी.वी.डी.,
website: www.everhealthylife.org

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

आत्माएं परस्पर कर्म के खाते से बंधी हैं

प्रश्न:- वो अपना ध्यान रखना ही नहीं चाहते, वो जीना ही नहीं चाहते और उसके बावजूद भी मैं उनका ध्यान रखती हूँ।

उत्तर:- राजयोग में जो सबसे आधारभूत बात बतायी जाती है वो ये है कि 'मैं कौन हूँ?' ये एक प्राथमिक अनुभूति है जो हमारे सारे उद्देश्य को बदल देती है कि ये शरीर है, इसका नाम है, इसका परिवार है, इसका पार्ट है, इसको जिम्मेवारी है, लेकिन इन सबके लिए हमने कहा 'मेरा', मेरा नाम ये है, मेरा प्रोफेशन ये है, मेरे रिश्ते ये हैं, शरीर के लिए भी हमने कहा मेरी आँखें, मेरा कान, मेरा शरीर, आज मेरा शरीर बहुत दर्द हो रहा है। तो ये सब कुछ 'मेरा-मेरा' कहने वाला मैं कौन हूँ यह हमें मालूम ही नहीं था।

अब हमें समझ में आता कि वो एक एनर्जी है जिसको हम 'चैतन्यता' कहते हैं, उसके अंदर पार्ट भरा हुआ है, उसमें जीवन है इसलिए हम उसे 'ह्युमन बीइंग' कहते हैं। यह बाँडो दो चीजों के मिश्रण से बनी है। एक तो यह बाँडो स्वयं है जो 'ह्युमस' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'मिट्टी' और दूसरी है आत्मा जो कि एक एनर्जी है। तो ये जो शरीर है 'ये मेरा है' और मैं कौन हूँ? वो शक्ति हूँ। जब हमें यह समझ में आ जाता है कि 'मैं एक एनर्जी हूँ' तो मैं ये भी समझती हूँ कि ऊर्जा कान न तो निर्माण किया जा सकता है, यह इन इसे नष्ट किया जा सकता है, यह शाश्वत है। इस चैतन्य शक्ति को आध्यात्मिक भाषा में 'आत्मा' या 'स्मिटर' कहते हैं। जब मैं शाश्वत हूँ तो मृत्यु किसकी होती है, क्योंकि पूरा जीवन हम मृत्यु के भय में जीते हैं। लेकिन जब मुझे समझ में आ जाता है कि मैं तो 'अविनाशी' हूँ तो मृत्यु का भय भी निकल जाता है। आज दिन तक हम सुनते आये 'आत्मा' अजर,

अमर और अविनाशी है जो अग्नि में जल नहीं सकता है, वह मर नहीं सकता, जिसका विनाश नहीं हो सकता, जब मैं अविनाशी हूँ तो प्रत्येक आत्मा भी अविनाशी है। तो अब मैं मृत्यु को अवधारणा को समझना है कि मृत्यु क्या है? मैं आत्मा हूँ जो इस शरीर का आधार लेकर अपना पार्ट बजाती हूँ और लोगों के साथ संबंध स्थापित करती हूँ। अब अगर हम इसको देखें कि मृत्यु अर्थात् वो आत्मा जो कल तक मेरे साथ थी, उसका मेरे साथ एक कार्मिक एकाउण्ट था। हम कहाँ से आते हैं जन्म और मृत्यु का निर्णय कैसे होता है? कब तक उसे उस शरीर में रहना है और फिर कब वहाँ से वापिस चलना है यह हमारे कार्मिक संबंध पर निर्भर करता है।

जिस परिवार में हमारा जन्म होता, जिन लोगों के सम्पर्क में हम आते हैं, उन आत्माओं के साथ मुझ आत्मा का कार्मिक कनेक्शन है। जिसको हम एनर्जी की लेन-देन कहते हैं और इसका आधार हमारे पिछले जन्म के हिसाब-किताब पर होता है, तो जिन आत्माओं के साथ हम आज हैं, हम पहले भी कभी उनके साथ थे। जब हम पहले उनके साथ थे तब हमारा एक पार्टिकुलर एकाउण्ट उनके साथ बना था। अब हम फिर से उनको मिलते हैं तो फिर हमारा एक एकाउण्ट बन जाता है। लेकिन जैसे ही मेरा ये एकाउण्ट चुकतु हो जाता है तब आत्मा उस शरीर को छोड़ देती है, इसके बाद वो आत्मा एक क्षण भी उस शरीर में रुक नहीं सकता है। अब हमें यह समझ में आ जाता कि वो आत्मा एक निश्चित

समय के लिए अपना एकाउण्ट चुकतु करने के लिए आयी थी। एकाउण्ट चुकतु हो जाने के बाद वो सोल अत्यधिक समय तक मेरे सम्पर्क में नहीं रह सकती है क्योंकि उसका मेरे साथ का एकाउण्ट खत्म हो गया है। अब वो सोल वहाँ गयी जहाँ एक नया एकाउण्ट है। इस तरह से 'सोल' अपनी यात्रा पर आगे बढ़ती रहती है।

जैसे इंस लाइक ए ट्रेन जिसमें हम सफर कर रहे हैं। हम सब अपनी-अपनी यात्रा पर हैं। अब ऐसा नहीं होगा कि सब लोग एक ही स्टेशन से चढ़ें और सब लोग एक ही स्टेशन पर उतरें। हरेक की यात्रा अलग-अलग है। तो हरेक का स्टेशन पर चढ़ने का और उतरने का स्थान भी अलग-अलग है। क्योंकि हरेक अपनी-अपनी यात्रा पर है।

अगर आपका एकाउण्ट मेरे साथ चार दिन का है तो उसके बाद आपको दूसरी जगह जाना ही जाना है। क्योंकि पाँचवें दिन आपका सम्बन्ध दूसरी जगह है। अब हम ऐसा भी कह सकते हैं कि आप सप्ताह में तीन दिन हमारे साथ रहते हैं। लेकिन चौथे दिन आपको कहाँ और जाना है। आपको वो वचनबद्धता है। अब मुझे तीन दिन तक आपके साथ बहुत अच्छा लगा। मैं सौचूँ, चौथे दिन भी आप यहाँ आ जायें। तो मेरे चाहने से आप यहाँ नहीं आ सकते पार्टिकुलर एकाउण्ट उनके साथ बना था। अब हम फिर से उनको मिलते हैं तो फिर हमारा एक एकाउण्ट बन जाता है। लेकिन जैसे ही मेरा ये एकाउण्ट चुकतु हो जाता है तब आत्मा उस शरीर को छोड़ देती है, इसके बाद वो आत्मा एक क्षण भी उस शरीर में रुक नहीं सकता है। अब हमें यह समझ में आ जाता कि वो आत्मा एक निश्चित

- क्रमशः



ब्र.कु. शिवाना



सितारगंज-उत्तराखण्ड। सांसद भगत सिंह कोश्यारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सराजा। साथ है ब्र.कु. तिलकराज तथा अय्या।



हाजीपुर-बिहार। बैरगाली जिला के डी.एम. विनोद सिंह गुजियाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आरती।



मोहनिया-कैमूर(बिहार)। विधायक एम.आर. निरंजन राम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. फूलकुमारी तथा ब्र.कु. रम्भा।



उनाव-(उ.प्र.)। "राजयोग द्वारा क्रोध निवारण एवं सरकाराल्क चिन्तन से सफल व सुरक्षित यात्रा" कार्यक्रम के अवसर पर हिन्दुस्तान पेट्रोलियम के प्रबन्धक नितिन श्रिवास्त्व को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ है ब्र.कु.कविता, ब्र.कु. कुसुम तथा अय्या।



मेरठ। 'तनावमुक्त जीवन शैली' शिबिर में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. सुतीशा, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. अल्का, ब्र.कु. मोतीलाल तथा अय्या।



वामरा-ओडिशा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में विधायक रवि नारायण नायक, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु.तपन, मीडिया कर्मी तथा अय्या।

'देखना जो चाहते ही इनकी उड़ान को

करना पड़ेगा ऊँचा और आसमान की किरण यदि युवाओं की उड़ान किन्तों ऊंची है ये हम देखना चाहते हैं तो आसमान का कद और ऊँचा करना पड़ेगा क्योंकि युवा शक्ति हर ऊँचाई की पार कर सकती है। युवा देश का भविष्य है वही सबका सहारा है। यदि देश को विकसित बनाना है तो पहले युवाओं की बुद्धि का विकास करना होगा। उनमें नैतिक मूल्यों की धारणा पर बल देना होगा। ये नैतिक मूल्य उनमें बचपन से ही डाले जाने चाहिए जब उनका मन-मस्तिष्क एक कोंके कागज की तरह होता है जिसपर हम जो रंग डालना चाहें डाल सकते हैं फिर भविष्य में उन्हीं रंगों की आकृति उभर कर आयेगी। युवा का मतलब ही है हमारा आज और आने वाला कल है। आज यदि युवा सही मार्ग पर अग्रसर हैं तो देश की उन्नति है और यदि आज उन्नति है तो भविष्य तो उन्नत ही हो जायेगा। केवल आवश्यकता है उनकी योग्यताओं को सही दिशा देने और उनका मार्ग प्रशस्त करने की। उनमें सभी शक्तियों का संचार करने की जिससे वे मार्ग में आने वाली बाधाओं से हार खाकर या डरकर बैठ न जाए। साथ ही उनमें एकाग्रता की शक्ति का विकास अति आवश्यक है। एकाग्रता के बिना कोई कार्य संभव नहीं है। यदि हम अपनी एकाग्रता की शक्ति को कई प्रकार के कार्यों में उलझाते रहते हैं तो अंततः कोई भी कार्य सफलता के साथ नहीं कर सकते। आवश्यकता है कि हम अपना ध्यान सभी अनावश्यक बातों से हटाकर उसी बात पर केन्द्रित करें जो हम करना चाहते हैं अन्यथा हमारी शक्ति का बिखराव होता रहेगा और हम किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पायेंगे। आजकल देखा जाता है कि अनिगलत युवा किसी खास क्षेत्र में निपुणता प्राप्त करने से पहले ही हिम्मत हार बैठते हैं और दूसरे क्षेत्र में अपनी किस्मत आजमाने की ओर बढ़ जाते हैं। कितना सरल है अपने क्षेत्र में काठे और दूसरे क्षेत्र में गुलबंद देखना। उदाहरण के तौर पर, जब कोई युवा किसी एक्टर को गाड़ी में बैठकर आते-जाते देखता है तो सोचता है कि एक्टर का जीवन कितना आरामदायक और ऐशो-आराम से भरा है। वह अपने भाग्य को कोसने लगता है कि उसे ऐसा चमक-दमक वाला पेशा क्यों नहीं मिला या उसका पेशा ही इतना उबाऊ क्यों है? उसे अपने पेशा ही सबसे कठिन लगता है। वह उन वर्षों के बारे में नहीं सोचता जब एक्टर बनने से पहले वह स्थान बिना किसी प्रयास के देख रहा था। वह उम्र तक अपना काम अथक परिश्रम करके यह स्थान प्राप्त करिगा। आज जब वह अपने व्यवासय में निपुण हो

अवसर को भाग्य में बदलें

- ब्र.कु. शांतिबा।

गया है जहाँ उसकी क्षमता उसे लाना पहुँचाने लगती है, उसका पेशा आकर्षक दिखने लगता है लेकिन इस स्थान तक पहुँचने के लिए उसने जो संघर्ष किया उसे भूल जाते हैं।

अपने जीवन को स्थिरता और दिशा देना कोई सरल काम नहीं है। लेकिन निरुध्देय जीवन बेकार और खोखले सपनों में नष्ट हो जाता है, यह भी निरिखत है। जिस काम को हमेशा अनिच्छा और निरुध्देय भाव के साथ करते हैं, वह हमारे लिए एक सच बन जाता है, और ऐसा काम ठीक से होता भी नहीं जिसमें उत्साह न हो। एक महान उध्देय ही जीवन को अर्थ देता है। यह हमारी शक्तियों को एकीकृत करता है, उन्हें एक-दूसरे से जोड़ता है, और जो अब तक बिखरा हुआ और निरबल था, वह मजबूत और एकीकृत दिखने लगता है।

कितना विलक्षण लगता है यह देखना कि एक ही जीवन तमाम मुश्किलों को चिरते और दूसरों को पराजित कर देने वाली बाधाओं को जीतते हुए सीधे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ा जा रहा है। विरोध उसके प्रयासों को और बढ़ा देता है, परिस्थितियाँ उसे और शक्तिशाली बनाती हैं। बीमारी, गर्मी, आलाचकों का समूह कुछ भी उसके मार्ग में आ जाए वह लक्ष्य से अपनी गजर नहीं हटाता। आलाचकों के शब्दों का असर उस पर वैसा ही होता है जैसे तूफान का बाज पर होता है। तूफान के झोंकों से बाज और ऊँचा उठ जाता है। जीवन में आगे बढ़ने वाले संघर्षों या प्रयासों में यह शान्ति और गरिमा है, कि उनसे हमें शक्ति ही मिलती है, भले ही हम उस स्थान पर न पहुँच पाएँ, जहाँ पहुँचना चाहते हैं या वह पुरस्कार न पा सके जो पाना चाहते हैं।

युवाओं की प्रगति में दूसरी आवश्यकता है दृढ़ता की। दृढ़ता चरित्र का वह गुण है जो व्यक्ति को उसके उध्देयों से न टूटने की मजबूती देता है और उसके लक्ष्य को संदेह उसके सामने केन्द्रित रखता है। दृढ़ व्यक्ति की उर्ध्वस्थिति ही नियंत्रण और आदेश पालन की सूत्रक होती है। उसे अपने समर्पण की घोषणा नहीं करनी पड़ती, क्योंकि उसकी दृढ़ता उसके कर्म से साफ झलकती है। जीवन की अधिकांश विफलताएँ दृढ़ता के अभाव के कारण ही मिलती हैं। किसी भी युवा के लिए वह बहुत बुरा है कि वह कमजोर और दुर्बिभाषण मनी:स्थिति के साथ किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करे। उसने आत्मनिश्चयस्य के साथ कुछ भी करने का

साहस नहीं होता और वह उतार-चढ़ाव का शिकार हो जाता है।

युवाओं के मध्य जीवन में कई अवसर आते हैं लेकिन आवश्यक है उसे पहचानना। पहचानकर उसमें सुधार करना पड़ता है और उसे अपने कार्य के अनुकूल बनाना पड़ता है। अवसरों का अन्त नहीं, भाग्य को प्लेट देने वाली घटनाओं की कोई कमी नहीं। कमी है तो केवल दृढ़ लग्न से कार्य में सुट जायेगा।

एक व्यक्ति एक आई नैचरी में घुसा। उनमें वहाँ अनेक चित्र देखे। एक चित्र में मूर्ति का चेहरा बालों से बुरी तरह ढका हुआ था और उसके पैरों में पख लगे हुए थे।

दर्शन में पूछा-यह चित्र किसका है? चित्रकार ने उत्तर दिया-यह अवसर का है। इसका मुँह क्यों छिपा रखा है? उत्तर- क्योंकि जब वह मनुष्यों के सामने आता है तो वो इसे पहचान नहीं पाते। इसके पैरों में पख क्यों लाते हैं? उत्तर- यह बहुत जल्दी जाता है, एक बार यह हाथ से निकल जाए तो फिर इसे फँके पकड़ नहीं सकता।

जो लोग अवसरों का उपयोग नहीं कर सकते या उसका उपयोग करना नहीं चाहते, वे भविष्य में भी उसका उपयोग नहीं कर पायेंगे। इसलिए आज सभों का कर्त्तव्य बनता है कि युवाओं को इस योग्य बनाए कि वे अवसरों की पहचान कर सकें और अपने जीवन को सही मार्ग पर ले जा सकें। यदि उनमें बचपन से ही इस योग्यता का विकास कर दिया जाये तो वे अपने जीवन में आने वाले सुनहरे अवसरों का लाभ उठा पायेंगे और अपना तथा देश का भविष्य उज्ज्वल बना पायेंगे। आवश्यकता है कि पहचान करने के लिए अपनी बुद्धि को अनावश्यक एवं व्यर्थ बातों से क्लेशित न करना पड़ेगा। यदि हमारी बुद्धि में अनावश्यक बातों ही भरती रहेंगी तो हम अनावश्यक बातों पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पायेंगे और कने नय में फंसकर अपने लक्ष्य से भटक जायेंगे। किन्तु निचे ही युवाओं का हम उदाहरण देखें तो उनकी सफलता का आधार उनकी एकाग्रता और दृढ़ निश्चय शक्ति ही थी। विवेकानंद की हम बात करते हैं, बच्चों को उनके बारे में पढ़ाते हैं लेकिन आवश्यकता है उन्हें उनके जैसा जीवन बनाने की प्रेरणा देना। कहीं ऐसा न हो कि वह सब केवल पढ़ने और सुनने तक ही सीमित रह जाये बल्कि इसे धारण करना होगा तभी हम देश को कई विवेकानंद दे पायेंगे और ऐसे युवा-शक्ति के संगठन द्वारा ही धरती को फिर से स्वर्ग बना पायेंगे।



<https://play.google.com/store/apps/details?id=app.bk.osm.OmShantiMedia>

आमशान्ति मीडिया अब एनड्रॉइड पर उपलब्ध है। आप गूगल प्ले करें।

लिंक-

... तुम वही हो जाओ, ...

जाती है-आई मौत, यही आई मौत; जीवन गया, गया- और कुछ हो न पाये; पता नहीं क्या लेकर आये थे, समझ में ही नहीं आया, पता नहीं क्यों आये थे, क्यों भेजे गये गतां, कुछ प्रतीती न हुई, गीत अनगन्या रह गया, फूल अनखिला रह गया।

सुनो उसकी आवाज़ और सभी आवाज़ें उसकी हैं, सुनने की कला चाहिए, गुनो उसे, क्योंकि सभी को उसने को बनाया है, गुनने की कला चाहिए। जागते-सोते, उठते-बैठते एक ही स्मरण रहे कि आप परमात्मा से घिरे हो। शुरू-शुरू में चूक-चूक जायेगा, भूल-भूल जायेगा, विस्मृति हो जायेगी, पर अगर आप धागे को पकड़ते ही रहे, तो जैसा महान आत्मार्यों कहते हैं, आप फूलों के ढेर न रह जाओगे, वही श्रुति का धाग तुम्हारे फूलों की

- पेज 2 का शेष ...

माला बना देगा। जिस दिन आपकी माला तैयार है, वह खुद ही झुक आता है, वह अपनी गरदन तुम्हारी माला में डाल देता है। क्योंकि उस तक, उसके सिर तक हमारे हाथ तो न पहुँच पायेंगे। बस, हमारी माला तैयार हो, वह खुद हम तक पहुँच जाते हैं। मनुष्य कभी परमात्मा तक नहीं पहुँचता। जब भी मनुष्य तैयार होता है, परमात्मा उसके पास आता है।

हे कलियाँ, जो तुम होने आये हो, जो तुम होना चाहते हो, जो तुम हो, उसे उखाड़ना है, परमात्मा को प्रेम के धागे में अपने इर्द-गिर्द बना लेना है। यही समय है आत्म और परमात्म मिलन का। उस वक्त को, उस क्षण को पकड़ लेना है।

पारउट आवू- पाउउड भवन।

आपने बैंगलोर से परमात्म ज्ञान प्राप्त किया। आपकी विशेषता देख दादीजी ने आपको मधुवन सेवा के लिए बुला लिया। वे सबको खुश करते थे इसलिए सबके प्यारे थे। स्वामी भाई जो कि महायज्ञ में कारपेन्टी डिपार्टमेंट में 44 वर्षों से समर्पित रूप से सेवाओं को संभाल रहे थे। कारपेन्टी डिपार्टमेंट में तीनों स्थान पर बहुत ही ज़िम्मेवारी से कार्य देख रहे थे। आपकी डायबिटीज की बीमारी थी। चार मास पूर्व आपको हाई डायबिटीज होने से आप कोमा में चले गये। आप 4 नवम्बर -2014 को अपना पुराना शरीर त्याग कर विशेष परमात्म कार्य के लिए अग्रसर हो गये।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान-गुणों का दान करने वाली आत्मा हैं।

शिवभगवानुवाच - 'बापदादा के मुरब्बों बच्चों के हर कर्म को रेखा से अनेकों के कर्मों की रेखा बदलती है। तो हर कर्म की रेखा से अनेकों की तकदीर की लकीरें खींची। तो जहाँ-जहाँ जाते हैं अपने कर्मों की कलम से अनेकों की तकदीर की लकीरें खींचे जाते। तो कदम अर्थात् कर्म ही मुरब्बों बच्चों के तकदीर की लकीरें खींचने की सेवा के निमित्त बना। कर्मों की गति का गुह्य रहस्य श्रेष्ठ सामने रखी। अनन्य बच्चों का हर कर्म श्रेष्ठ होता है। उनमें विश्वीयता यह होती है कि उनके हर कर्म द्वारा, अनेक आत्माओं का पथ-प्रदर्शन होगा। जो गायन भी है कि जो कर्म में करगुा मुझे देख सब करंगे। ऐसे उनके हर कर्म अनेक आत्माओं को एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जाएंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा। इसको कहा जाता

है- समर्थ कर्म। ऐसे कर्म वाला सदा स्वयं से संतुष्ट होगा और हर्षित होगा।'
मनन-चिन्तन - कर्म-आत्मा का दर्शन कराने वाला दर्पण है। श्रेष्ठ कर्म ही ऊँच तकदीर बनाने का साधन है। सदा किन महावाक्यों को सामने रखें जो कर्म पर अटेरान हो। ब्रह्मा बाबा एवं दादियों ने कैसे निमित्त, निर्माण व निरहंकारी होकर कर्म करना सिखाया है, इस पर विचार सागर मंथन करें।
योगाभ्यास - सूक्ष्म वतन में बापदादा को सगुरु के रूप में समुख रख महान व श्रेष्ठ कर्म करने की समझ व शक्ति ले रहे हैं... बापदादा को दिन भर में बीच-बीच में एवं रात को सोने से पहले धर्मराज के रूप में समुख रख अपना पोतामेल देते रहें... बापदादा के समुख प्रतिज्ञा को दोहराए कि संगमयुग

में कोई भी ऐसा कर्म हमसे नहीं होगा जो ब्राह्मण कुलभूषण के योग्य नहीं है।
व्यवहार में - ना खुद को देह समझकर व्यवहार में आएँ और न दूसरों को देह समझकर व्यवहार में आएँ, हम शुद्ध करनहार आत्मा हैं, करनकरावनहार बाबा हैं।
तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - हर पल कर्म हो रहा है... हर पल हमारा जन्म-जन्म का भाग्य बन रहा है या बिगड़ रहा है... संगमयुग की विलक्षण घड़ियाँ यू ही न बीत रही हों इसका पूरा-पूरा अटेरान रहे... जैसे सीमा पर दुश्मनों के समुख खड़ा भौजू सजग व सतर्क रहता है उसी प्रकार हम तीव्र पुरुषार्थियों के लिए यह कर्मक्षेत्र ही युद्ध स्थल है और हमें हर पल सजग व सतर्क रह माया दुश्मन के बार को पहले से समझकर विफल कर देना है, विघ्न आने ही नहीं देना है।



सेक्टर 55-वल्लभगढ़। ज्ञान चर्चा के बाद समूह चित्र में हरियाणा सरकार के श्रम राज्य मंत्री पण्डित शिव चरण शर्मा, ब्र.कु. सुरशीला तथा अन्य।



दिल्ली-लाजपत नगर। आध्यात्मिक कार्यक्रम में विधायक तरविन्दर सिंह मारवाह अपनी शुभकामनाएं देते हुए। साथ ही ब्र.कु. चन्द्र तथा अन्य।



बदिया-गुलरिया(नेपाल)। साप्ताहिक कोर्स करने के बाद समूह चित्र में जिला अदालत के न्यायाधीश वसन्तराज पौडेल, सहायक डी.एम. एकदेव अधिकारी, कोष तथा लेखा नियंत्रक रुकमानाग भट्टराई, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

स्वमान-में देह रूपी रथ को चलाने वाली आत्मा सारथी हैं।

शिवभगवानुवाच - 'सदा योगयुक्त रहने की सरल विधि है - सदा अपने को 'सारथी और साक्षी' समझ चलना। आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं इस रथ के सारथी हो। रथ को चलाने वाली आत्मा सारथी हो। यह स्मृति स्वतः ही इस रथ अथवा देह से न्यारा बना देती है। देहभान नहीं तो सहज योगयुक्त बन जाते और हर कर्म में योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वतः ही हो जाते हैं। सारथी अर्थात् आत्म-अभिमान। क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नग्नवन की सिद्धि प्राप्त की।'
योगयुक्त होने की विधि - 1. जैसे देह को अधीन कर शिवबाबा प्रवेश होते अर्थात्

सारथी बनते हैं, देह के अधीन नहीं बनते। इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान इस देह में स्थित होने का अनुभव करें... चलते-फिरते कर्म करते भी यह चेक करें कि मैं सारथी अर्थात् सर्व को चलाने वाली न्यारी। और प्यारी स्थिति में स्थित हूँ... बीच-बीच में ये चेक करें। सारा दिन यदि यू ही बीत गया तो बीता हुआ समय सदा के लिए कमाई से गया। यह स्वतः नैचुरल संस्कार बनाओ। कौन-सा? चेंकिंग का।
2. सारथी स्वतः ही साक्षी होकर कुछ भी करंगे, देखेंगे, सुनेंगे... साक्षी बन देखने, सुनने, करने सबमें सबकुछ करते भी निर्लेप

रहेंगे अर्थात् माया के लेप से न्यारे रहेंगे।
स्व-चेंकिंग - 'सारथी' किसी भी कर्मन्त्रिय के वश नहीं हो सकते। माया के वार करने की विधि यही होती है कि कोई-न-कोई स्थूल कर्मन्त्रियों अथवा सूक्ष्म शक्तिवत्यां - 'मन-बुद्धि-संस्कार' के परस्पर बना देती है। आप सारथी आत्माओं को जो महामंत्र, वशीकरण मंत्र बाप से आपको मिला हुआ है उसको परिवर्तन कर वशीकरण के बजाय वशीभूत बना देती है। एक बात में भी वशीभूत हुए तो सभी भूत प्रवेश हो जाते हैं। इसलिए सारथी पन का भान विस्मृत न हो...।



चंद्रपुर-भद्रावती। चैतन्य नवदुर्गा झाँकी के उदघाटन परचात् समूह चित्र में वाजपयी जी, महाप्रबंधक ऑर्डिनेंस फैक्ट्री, ब्र.कु. कुन्दा, ब्र.कु. दीपक तथा अन्य।

योग मन के... - पेज। का श्रेष्ठ भाव है जो कि उन्नति करता है। हरेक धर्म के मूल में देया का ही मूल मंत्र है। उक्त विचार चाइना से आये बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध योगी मा. जौजिंग ने ब्रह्माकुमारीज के आम शान्ति रिट्रीट सेंटर में आयोजित कार्यक्रम 'द पावर ऑफ कमर्शन' में व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि योग मन के परिवर्तन की एक अवस्था है, हमारे विचार प्रकृतिक के तत्वों को भी प्रभावित करते हैं। अगर हम अपने परिवार एवं अपने साथियों को बदलना चाहते हैं, तो पहले हमें स्वयं के मन को बदलने की जरूरत है, जिसके लिए योग बहुत आवश्यक है। मैं यहाँ कुछ सीखने के लिए आया हूँ, मैं अपने को सदा विद्यार्थी ही समझता हूँ, जो कुछ भी मुझे अपने

जीवन में अनुभव हुआ, उसे आपके साथ बाँटकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं यहाँ के शक्तिशाली वातावरण से एक ऐसी ऊर्जा लेकर जा रहा हूँ जिसे कि पूरे चाइना में फैलाऊंगा। योग का अभ्यास करवाते हुए उन्होंने कहा कि जब साँसें लेते हैं, तो सारे यूनियर्स को ऊर्जा में अंदर प्रवेश कर रही है और जब साँसें छोड़ते हैं, तो मेरे अंदर की नकारात्मकता पूर्णरूप से बाहर निकल रही है। मा. जौजिंग एरोनोटिक्स के क्षेत्र में भी अपनी सेवायें दे चुके हैं, 1998 से वे बौद्ध धर्म में एक योगी अथवा सन्यासी के रूप से कार्य कर रहे हैं। सन् 2006 से बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए चीन से बाहर भारत, केनिया और अमेरिका का प्रगम कर चुके हैं।

वर्तमान समय चाइना के दस लाख से भी अधिक लोग पंजीकृत रूप से उनके मिशन से जुड़े हैं।
ओ. आर. सी को निर्देशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि आज व्यक्ति बाहरी रूप से स्वयं को समन बनाने में लगता हुआ है, लेकिन अंदर से खाली होता जा रहा है। हमें स्वयं को अंदर से भरने की आवश्यकता है, जो भी तभी संभव है जब हम स्वयं का चिन्तन करेंगे और वास्तविक स्वरूप को पहचान कर उसमें स्थित होने का प्रयास करेंगे। कार्यक्रम में 350 से अधिक लोगों ने भाग लिया, जिसमें कि 260 मेहमान चाइना से आये हुए थे। चाइना से आये हुए मेहमानों ने अपनी भाषा में सुंदर गीत एवं नृत्य भी प्रस्तुत किए।



दिल्ली-शक्ति नगर। ज्ञान चर्चा के बाद समूह चित्र में नगर निगम परिषद् के वित्तिय सलाहकार पी. के. सिंह, आई. डी. ए. एस., ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. गणेश एवं ब्र.कु. अजली।



रेनूकूट-उ.प्र.। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाने के बाद समूह चित्र में रिहन्द बांध के पूर्व एन. आर. एन. एस. यादव, ब्र.कु. राजकन्या तथा अन्य।



फानी-राजापार्क(जयपुर)। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् एस. डी.एम. राजेश कुमार को ईश्वरवी सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता।



रायट्सगंज-(उ.प्र.)। आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा के बाद आर जिला मजिस्ट्रेट मनोमाल यादव को लकी कार्ड निकलवाते हुए ब्र.कु. सुमन।



गोपालगंज। जिलाधिकारी कृष्ण मोहन को ईश्वरवी सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंगूर।



लंदन। दिवाली कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. जयन्ती। साथ है अन्य भाई बहनें।



आगरा-शांकीपुरम। सेवाकेन्द्र के हॉल का उद्घाटन करने के बाद दीप प्रज्वलन करते हुए ब्र.कु. विमला, ज्ञान इचार्ज, आगरा, ब्र.कु. अश्विना, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. मधु तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



छिंदवाड़ा। 'संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए विधायक चौधरी चंद्रभान सिंह, नार पालिका उपाध्यक्ष धर्मेंद्र मिगलानी, हिन्दी प्रचारणी के प्राध्यापक विमल परिहार, जबलपुर से आर्या ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. गणेशी तथा अन्य।



ववाना-दिल्ली। ज्ञानचर्चा के परचात समूह चित्र में पुलिस स्टफ, ब्र.कु. चन्द्रिका तथा ब्र.कु. जिगिषा।



मीरगंज-विहार। जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर भा.ज.पा. नेता ज्योति भूषण को ईश्वरयोग सौगात देते हुए ब्र.कु. सुनिता तथा अन्य।



वोदवड-जलगांव। शहर के चौक में सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा के बैनर के उद्घाटन परचात संबोधित करते हुए ब्र.कु. वर्षा।

स्वधर्म सुख का आधार है और परधर्म दुःख का कारण

इसलिए जहाँ स्वार्थ युक्त प्रेम होता है, वहाँ शान्ति कभी हो ही नहीं सकती है। जहाँ आपसी समझ, शुद्ध भावनायें, प्रेम हो तो वहाँ शान्ति वास करती है। जहाँ ये चारो होते हैं वहाँ जीवन का सच्चा सुख है। आज मनुष्य को जीवन में सच्चे सुख का अनुभव ही नहीं होता है क्योंकि उसके ये चारो आधार ही नहीं। जहाँ ये पाँचों हैं वहाँ जीवन का सर्वोच्च प्राप्ति आनंद है, खुशी है, उत्साह है, तब जीवन में उमंग आता है और जीवन जोने का आनंद आने लगता है। यही तो जीवन जोने की कला है और जहाँ ये छः बातें हैं - वहाँ 'आत्मशक्ति' अनुभव होती है। आज आत्मशक्ति को तो छोड़ो मनुष्य जीवन में 'विश्वास' ही खत्म होता जा रहा है। इसका कारण क्या है? ये छः गुणों की कमी। वास्तव में ये आत्म के गुण नहीं बल्कि छः शक्तियाँ हैं। ज्ञान की शक्ति (पावर ऑफ नॉलेज), प्रवृत्ता की शक्ति (पावर ऑफ प्यूरिटी), प्रेम की शक्ति (पावर ऑफ लव), शान्ति की शक्ति (पावर ऑफ पीस) ये सब शक्तियाँ हैं। जब ये शक्ति हो तो आत्मशक्ति विकसित होती है। यही सत गुण आत्मा का स्वधर्म है, यही उसका गुणधर्म है। जिसमें स्थित होकर हर आत्मा कम्पर्टमेंटल अनुभव करती है। अगर ये गुण धर्म ही न हो, मान लो सब कुछ हो लेकिन शान्ति ही न हो तो वो जीवन कैसा होगा? टेंशन से भरा होगा। इसमें से एक गुण भी कम हो जाए, जैसे शरीर के

पाँच तत्वों में से एक तत्व भी कम हो जाए तो कैसी बेचैनी होती है। ऐसे आत्मा में भी सात गुणों में से एक गुण भी कम हो गया तो जीवन जोने का आनंद नहीं रहेगा। जीवन नहीं लगेगा। ये स्वधर्म है, दूसरे शब्दों में कहें तो यही आत्मा की बैट्री है। लेकिन आज के युग में ये बैट्री डिस्चार्ज हो गयी है। अब उसको चार्ज कैसे करें? इसलिए भगवान ने अर्जुन को कहा कि हे अर्जुन! तुम्हारे पास आत्मा में इतनी क्षमता और ऊर्जा होने के बाद भी अगर तुम युद्ध नहीं करोगे, इस संघर्ष में अपने मन को विजयी नहीं बनाओगे तो पाप लोंगा और तुम अपनी कीर्ति को भी खोकर अपयश के भागी बनोगे। लेकिन इस स्वधर्म से आज इंसान बहुत दूर चला गया है। यही उसके अनादि संस्कार हैं जिससे हम दूर होकर परधर्म के लक्षणों को अपने जीवन में ले आए हैं। तभी कहा जाता है 'स्वधर्म का आधार है और परधर्म दुःख का कारण है।' ये परधर्म कौन सा है? ये स्वधर्म से 'पर' कौन सी बात है? वह है अज्ञान यानि अहंकार, अपवित्रता, स्वार्थ की भावनायें। नफरत, शान्ति के बजाए तनाव, क्रोध, सुख

के बजाए दुःख की फीलिंग, आनंद के बजाए उदासी की भावनायें या ईर्ष्या की भावनायें। जहाँ आत्मशक्ति का अनुभव नहीं होता वहाँ 'परधर्म' है। स्वधर्म सुख का आधार है और

गीता ज्ञान का

आध्यात्मिक

बहुर्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा



परधर्म दुःख का कारण है। आज हम अपनी वास्तविकता से बहुत दूर चले गए हैं इसलिए अपने स्वधर्म के संस्कार से बहुत दूर चले गये हैं तब परधर्म की अधीनता हमारे जीवन में आ जाती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, आलस्य, भय, स्वार्थ उसको अधीनता जीवन में आ जाती है और यही दुःख का कारण है। इसलिए स्वधर्म के संस्कार को पुनः जागृत करना है। इसलिए महान आत्माओं ने कहा कि शान्ति बाहर नहीं भीतर है, सुख बाहर नहीं है भीतर है, भीत जाओ, शान्ति बाहर नहीं है भीतर है इसलिए भीतर जाओ। ये हम सबके भीतर हैं, लेकिन आज हम उससे बहुत दूर चले गए हैं। -क्रमशः

राजयोगी जीवन

राजयोगी जीवन बनाने का अर्थ ही यह है कि हम इन अनेक प्रकार के आकर्षणों से छूट जायें क्योंकि 'पराधीन सपने ही सुख नहीं'। सुख तो स्वाधीनता में और स्वतन्त्रता में ही। स्वतन्त्रता इन आकर्षणों से मुक्त होने में ही है। इन आकर्षणों से आजाद होने की विधि योग है। योग के अध्यास द्वारा मनुष्य धन, सत्ता, सौन्दर्य, इन्द्रिय विषयों इत्यादि के प्रभाव-क्षेत्र से निकल कर परमात्मा के प्रभाव-क्षेत्र में आ जाता है। उसके मन में सात्विक प्रकार का सही वैराग्य आ जाता है जिससे कि वह धन और सत्ता इत्यादि के मोह तथा अभिमान से मुक्त हो जाता है और उन्हें प्राप्त करने के लिये भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार और दुर्व्यवहार को नहीं अपनाता। योग द्वारा ही वह सन्तुष्ट हो जाता है और सन्तुष्टता ही लोभ की प्रतिरोधी है। योगियों की कर्मन्द्रियाँ चंचल न होकर शीतल होती हैं। योगी ही रंग, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, सौन्दर्य इत्यादि के आकर्षणों से मुक्त होकर परमपिता परमात्मा ही की ओर आकर्षित होता है। वह साज-सज्जा के बजाए सादगी को ही अपनाता है। सादगी, स्वच्छता तथा समता ही सबसे बड़ी प्राप्ति है। उस प्राप्ति को पाकर उस सत्ता की इच्छा नहीं होती।

योग के अध्यास के बिना, कोई व्यक्ति, चाहे वह धर्म-प्रेमी, प्रभु-प्रेमी और

मर्यादा-प्रेमी भी हो, धन, सत्ता, सौन्दर्य और ऐन्द्रिय सुख-सामग्री के आकर्षणों से मुक्त नहीं हो पाता। साधु, सन्त, महात्मा भी इनसे खिंचे हुए-से इनकी फिसलन में फिसल जाते हैं। कई लोग योगी बनने के लक्ष्य से योग मार्ग की ओर जाते हैं परन्तु वे अन्य प्रकार के इन आकर्षणों में फंस जाते हैं। जनता की सेवा



करते-करते वे उसके लिये ही धन इकट्ठा करने लगते हैं, और फिर इस प्रवृत्ति के बढ़ने पर वे सेवा के भाव को गौण तथा पैसों के संग्रह को प्रधानता दे देते हैं। उन्हें लोग फल-फूल, घो-दूध, अन्न-धन देते हैं परन्तु वे उनके चस्के की चीजे बना कर उनके रसिक बन जाते हैं। 'फलां जगह आध्यात्मिक सन्देश पहुँचाना है; फलां लोगों को भी लाभान्वित करना है' — इस उद्देश्य को लेकर वे चलते हैं परन्तु चलते-चलते उस स्थान या क्षेत्र को तथा उन लोगों को अपनी ही सम्पत्ति मानने

लगे हैं। बड़े सत बनने पर वे अन्य साधुओं-सन्तों में बड़ी प्रतिष्ठा पाने की कामना करने लगते हैं और इस प्रकार सत्ता के प्रलोभन में आ जाते हैं, सत्ता के प्रलोभन में ही वे बड़े-बड़े महल बनाते हैं, उनको सजाते तथा उस द्वारा अपनी पब्लिसिटी कराने को चेष्टा कर बैठते हैं। 'योगी' कहलाने पर भी उनके जीवन में सादगी और त्याग नहीं होता बल्कि वे महत्वाकांक्षी वाले होते हैं और अनेक प्रकार के आकर्षणों रूपा डोरों में जकड़े हुए होते हैं।

इसलिये ही कहा गया है कि 'राजयोगी भव'। योग मार्ग पर जाने की केवल कामना ही नहीं करनी है बल्कि प्रैक्टिकल में योगी बनना है। योगाध्यास द्वारा ही देह से न्यारे होकर इन आकर्षणों से मुक्त हो सकते हैं क्योंकि इन सभी आकर्षणों का सम्बन्ध देह-अभिमान से ही है। इन आकर्षणों के कारण ही आत्मा इस स्थूल जगत की चेतना से मुक्त होकर ऊँची उड़ान नहीं भर सकती। इन आकर्षणों के कारण ही वह फरिश्ता नहीं बन सकती बल्कि आत्मा पिंजरे के पक्षी के समान बन्धी हुई है। जब पूर्ण पराकाष्ठा में वैराग्य होगा, देह-अभिमान का त्याग होगा, योग का अध्यास करने स्वरूप सौभाग्य होगा तभी आत्मा पूर्ण रूप से स्वतन्त्र और सुख-शान्ति-समग्र रूपी होगा। अतः योगाध्यास जिन्दावाद; प्रकृति के आकर्षण मुर्दावाद!

कथा श्रिता

ज्ञान की सार्थकता

संसार में ऐसे बहुसंख्यक लोग हैं जो संत-महात्माओं की वाणी सुनते हैं, किंतु उसका कोई लाभ नहीं ले पाते, क्योंकि किसी भी तरह के ज्ञान का लाभ पाने के लिए उसे व्यवहार में उतारना भी जरूरी है।

महात्मा बुद्ध की धर्मसभा में प्रवचन सुनने एक व्यक्ति नियमित रूप से आया करता था। उसका यह क्रम एक महीने तक चला, किंतु उसके जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बुद्ध उपदेश देते कि लोभ, द्वेष और मोह पाप के मूल हैं, इन्हें त्यागो। किंतु वह व्यक्ति इन बुराइयों में उतना ही फंसाता जाता था। बुद्ध कहते थे कि जो क्रोध करता है उससे स्वयं उसी का अहित होता है, किंतु जो क्रोध का जवाब क्रोध से नहीं देता, वह एक भारी बुद्ध जीत लेता है। लेकिन उस व्यक्ति का उग्र स्वभाव तो उग्रतर होता जा रहा था। हैरान-परेशान होकर वह बुद्ध के पास गया। उन्हें प्रणाम कर बोला - स्वामी! एक माह से मैं आपके प्रवचन सुन रहा हूँ, किंतु उनका तनिक भी असर मेरे आचरण पर नहीं पड़ा। मैं बहुत परेशान हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?

बुद्ध उसकी बात सुनकर बोले - तुम कहाँ के रहने वाले हो? उसने कहा - श्रावस्ती का। बुद्ध ने अगला प्रश्न किया - यहाँ राजगृह से श्रावस्ती कितनी दूर है? उसने अनुमान लगाकर बता दिया। बुद्ध ने पूछा - यहाँ से वहाँ तक कैसे जाते हो? उसने कहा - सवारी से। बुद्ध ने पुनः जिज्ञासा प्रकट की - कितना समय लगता है? उस व्यक्ति ने हिंसा लगाकर बता दिया। बुद्ध ने प्रश्न उपस्थित किया - अब यह बताओ कि यहाँ बैठे-बैठे राजगृह पहुँच सकते हो? उसने बोला - यह कैसे हो सकता है? वहाँ पहुँचने के लिए तो चलना होगा। तब बुद्ध ने बड़े प्रेम से उसे समझाया - तुमने सही कहा। चलने पर ही मंजिल तक पहुँचा जा सकता है।

इसी तरह अच्छी बातों का असर तभी पड़ता है जब उन पर अमल किया जाए। ज्ञान के अनुसार कर्म न होने पर वह व्यर्थ है। उस व्यक्ति को अपनी गलती समझ में आ गई और उसने तदनुसार सुधार कर लिया जिससे उसका जीवन सदाचारी बन गया।

बड़ा आश्रम

एक राजा था। उसका राज्य बड़ा था। एक दिन राजा ने सोचा-मुझे गुरु बनाना है, पर मेरा गुरु वही बनेगा, जिसका आश्रम सबसे बड़ा होगा। उसने पूरे राज्य में मुनादी कराया दी-जिसके पास सबसे बड़ा आश्रम है, वह राजदरबार में आए। राजा उसे अपना गुरु बनाएगा। घोषणा सुनकर कई सन्यासी राजा के दरबार में पहुँचे। सन्यासी अपना-अपना आश्रम बड़ा बताने लगे। एक ने कहा-मेरे पास सौ एकड़ जमीन का आश्रम है। दूसरे ने कहा-मेरे पास तो हजार एकड़ का आश्रम है। इस तरह सभी ने अपनी कह दी। राजा ने देखा कि एक सन्यासी कोने में चुपचाप खड़ा था। राजा ने उससे पूछा-आप कुछ नहीं बोल रहे हैं। आपका आश्रम कितना बड़ा है? सन्यासी बोला-मैंने यहाँ इतने बड़े-बड़े आश्रमों के बारे में सुना। पर मैं अपना आश्रम आपको आँखों से दिखाना चाहता हूँ। राजा ने पूछा-कहाँ है आपका आश्रम? सन्यासी बोला-आप मेरे साथ चलिए। राजा सन्यासी के साथ चलने को तैयार हो गया।

सन्यासी राजा को घने जंगल में ले गया। वहाँ एक पीपल का पेड़ आया। उस पेड़ के नीचे आसन लगाकर सन्यासी बैठ गया। राजा बोला-अरे, आप तो यहाँ आकर बैठ गये। आपने अपना आश्रम तो मुझे दिखाया ही नहीं है। सन्यासी बोला-यही तो है, मेरा आश्रम। राजा बोला-मुझे तो यहाँ कुछ भी नजर नहीं आ रहा है। सन्यासी बोला-राजन्, मेरे ऊपर आसमान है और नीचे जमीन है। क्या इससे बड़ा कोई आश्रम हो सकता है? धरती से अंबर तक का साम्राज्य उसी का होता है, जिसके पास कुछ नहीं होता। मेरे पास कुछ नहीं होकर भी सब कुछ है। राजा सन्यासी की बात सुनकर खुश हुआ और उसे अपना गुरु बना लिया।

परोपकारी

यमन देश में टाय नाम का कबीला था। कबीले के सरदार का इकलौता बेटा हातिम हमेशा लोगों को भलाई में लगा रहता था। वह किसी की भी मदद के तैयार हो जाता था। हातिम के व्यवहार की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। लोगों ने उसका नाम परोपकारी रख दिया।

यमन देश का बादशाह भी काफी दरियादिल था। लोग उसे भी परोपकारी कहते थे। अपने से ज्यादा हातिम की चर्चा सुनकर, वह परेशान हो जाता था। एक बार बादशाह ने भोज का आयोजन किया। भोज के दौरान सभी ने बादशाह के परोपकारी स्वभाव की बहुत तारीफ की। लेकिन एक आदमी ने हातिम को परोपकारी कह दिया। बस, फिर क्या था! बादशाह गुस्से में आगबूला होकर बोला- 'मैं आदेश देता हूँ कि हातिम को खत्म करने का काम तुम्हें ही करना है। इसके बदले मैं तुम्हें बहुत सारी धन-दौलत दूंगा।' एक तो बादशाह का आदेश था, दूसरा धन-दौलत का लालच। वह हातिम को मारने के इरादे से चल पड़ा। लंबा सफर तय करके, वह तलवार लेकर कबीले में पहुँचा। वहाँ उसे हातिम मिला। वह हातिम को नहीं पहचानता था। हातिम ने जब सुना कि वह लंबा सफर तय करके आया है और धका हुआ है, तो वह उसे अपने घर ले गया। उसे हर सुख-सुविधा दी। रात को भोजन कराकर गरम बिस्तर सोने के लिए दिया।

सुबह वह आदमी अपनी तलवार उठाकर जाने लगा। हातिम को धन्यवाद कहकर वह बोला- 'तुमने मेरा बहुत आदर-सत्कार किया। अब एक मदद और कर दो। मुझे परोपकारी हातिम का पता बता दो।' 'क्या काम है तुम्हें उससे?'-हातिम ने हैरान होकर पूछा। 'दरअसल तुमसे कुछ छिपाऊंगा नहीं। यमन देश के बादशाह को सभी परोपकारी कहकर बुलाते हैं। बादशाह नहीं चाहते कि उनके अलावा किसी और को कोई परोपकारी कहे। इसीलिए उन्होंने मुझे हातिम को मारने का आदेश दिया है। यदि मैंने उस मार दिया, तो वह मुझे बहुत सा धन-धान्य देते, जिससे मैं आराम से जीवन जी सकूँगा।' हातिम ने एक पल की भी देरी किये बिना उस आदमी के सामने सिर झुका दिया। बोला- 'तुम बेझिझक मुझे मार दो, क्योंकि मैं ही हातिम हूँ। मुझे मारकर तुम्हारे बादशाह को सुकून मिल जायेगा और तुम्हें सुखी जीवन।'।

यह सुनकर वह आदमी घबरा गया। उस आदमी के हाथ से तलवार जमीन पर गिर गई। वह हातिम के पैरों में गिरकर माफी मांगने लगा- 'तुम्ही असली परोपकारी हो। मैं तुम्हें सलाम करता हूँ। हो सके, तो मुझे माफ कर दो।' वह चेहरे पर पश्चाताप के भाव लेकर चला गया। हातिम ने उसे काफी रोशनी की कोशिश की, परंतु वह बिना रुके दौड़ता गया और बादशाह के दरबार में जाकर ही रुका। फिर वह इतिहासकार बोला- 'बादशाह सलामत! आप चाहें, तो मुझे जान से मरवा दीजिए, परंतु मैं हातिम को नहीं मार सकूँगा, क्योंकि वह हकीकत में परोपकारी है।' फिर उसने अपने साथ घटी सारी घटना कह सुनाई। बादशाह ने जब सच्चाई सुनी, तो उसके मुँह से एकाएक निकला- हातिम! तुम वाक्यों में परोपकारी हो। बादशाह बोला-असली परोपकारी वह है, जो दूसरों की सुख-सुविधा के लिए अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार है।' बादशाह ने उस आदमी को बहुत-सा धन दिया। वह खुश होकर चला गया।

आध्यात्मिक साधना... - पेज 10 का शेष

किसी एक महान गुरु - प्रेम, सहनशीलता, दया आदि के विकास का प्रयत्न करो।

10. किस दोष को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं?

यदि आप बहुत ऊँचाई से देखें तो आप स्पष्ट समझ सकेंगे कि आपके कौन से कर्म या विचार आप को मिथ्या जगत के सागर में गले में बंधे पत्थर के समान बोझ बनकर डुबा रहे हैं? आप रस्सी को तुरन्त काट दीजिये, पत्थर को डूब जाने दीजिए और आप स्वयं जल की सतह पर उठकर और तैर कर किनारे आ जाइयें। इसलिए समस्या को समझकर उसका सही निदान खोजने की आवश्यकता है।



गुडगांव। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी हृदयमोहिनी, सुभाष चंद्र प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक, रामीना शफीक, ब.कु. पुष्पा, ब.कु. शिवानी, ब.कु. आशा तथा अन्य।



फर्रुखाबाद-उ.प्र. स्वामी कुलाधिपति जगतगुरु राजभद्राचार्य जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. मंजु। साथ हैं ब.कु. गिरजा, मनीष मिश्रा, अनिल कुमार त्रिपाठी तथा अन्य।



डिग्गी-राजापार्क जयपुर। एस.डी.एम. देववाम सुथार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. जीत। साथ हैं अन्य भाई बहन।



चरखी दादरी। 'स्वर्णिम भारत का आधार स्वच्छ ग्रामीण जीवन' विषयक कार्यक्रम का कैडल लाइटिंग के द्वारा उद्घाटन करते हुए ब.कु. अमीरचंद, सतबीर कादयान,बाहुडा,बी.डी.पी.ओ., डॉ. दलीप सांगवान,पूर्व निर्देशक,पशु पालन विभाग, ब.कु. प्रेमलता, ब.कु. वसुधा,कादमा तथा अन्य।



भवानी नगर-जयपुर। डॉ.की का उद्घाटन करने के पश्चात् महापौर ज्योति खण्डेलवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. हेमा तथा उद्योगपति ब.कु. मदनलाल शर्मा। साथ हैं अन्य।



मंचर-पुणे। महात्मा गांधी विद्यालय व जूनियर कॉलेज में 'नैतिक शिक्षा आज की नितांत जरूरत' विषय पर मागदर्शन करते हुए ब.कु. बालू।

दुनिया के लिये मिसाल कायम करता आदर्श परिवार



गोपी किशन गुलाब चंद, पेशे से सी.ए. हैं। 1979 में शुरू हुई जी.जी.रॉड इंण्ड कंपनी मेरी फर्म है। पहले मैं अकेला ही उसमें सी.ए. था लेकिन अभी हम चार पार्टनर हैं जिसमें मेरा बेटा विवेक को भी सी.ए. है, एक भतीजा मेरा सी.ए. है। नागपुर, औरंगाबाद में भी ब्रांचेज हैं। इस तरह चार जगह ब्रांच और हम चार सी.ए. हैं। राजयोग ने मेरे मन की तलाश पूरी कर दी। व्यवसाय में आनेवाली कठिनाइयों पहले मुझे इरीटेट कर देती थी। राजयोग के ज्ञान ने मुझे मानसिक धरातल पर इतना मजबूत कर दिया है। जिससे अब उनसे मुक्त होकर कार्य करता हूँ। व्यवसाय व सख्यन्ध में मधुरता तथा हर प्रकार से जीवन जैसे आनंदित होकर चल रहा है। वे ओमशान्ति मीडिया से रूबरू हुए। उनसे बातचीत का कुछ अंश-

प्रश्न- आप माउण्ट आबू में पहली बार कब आये?

उत्तर: 1987 में मैं पहली बार मधुवन आया और उस समय मुझे ज्ञान मिला। वैसे मैं प्रोफेशन से चार्टेड एकाउंटेंट हूँ तथा इसके साथ-साथ लायन्स क्लब, माहेश्वरी ग्रुप और बिजनेस ग्रुप आदि में मैं सोशल वर्क करता था। बचपन से



एक चीज की मैं खोज कर रहा था। मुझे स्वयं में कोई ऐसी शक्ति चाहिए थी। आगे ये जो गृहस्थी है इसमें स्वार्थ भरा हुआ है और कभी-कभी इस मायावी माहौल में हम फंस जाते हैं, उस समय उसको रोकने की एक शक्ति चाहिए। जब पहली बार मैंने राजयोग शिविर शौलू बहन जो से किया और दस मिनट का जो योग उन्होंने कराया उससे मुझे मत्स्य हुआ कि यही वो शक्ति है जिसकी मुझे तलाश थी, और उस दिन से मेरी रूचि उसमें बढ़ती गयी। मुझे हर क्षेत्र में इससे मदद मिली। परमात्मा की जो शक्तियाँ हैं इसका अनुभव मुझे खास दो जगह हुआ। एक तो गृहस्थी में कई बार उतार-चढ़ाव आते हैं, विघ्न आते हैं तो कई ऐसे विघ्न आये थे जिसमें परमात्मा ने बहुत मदद दी। दूसरा प्रोफेशन में भी मैंने देखा कि जब हम साइलेंस में बैठते हैं, परमात्मा को

याद करते हैं, राजयोग करते हैं उनका आह्वान करते हैं कि आप मेरे साथ थीं और हमें मिलकर ये काम करना है तो आसानी से सब काम हो जाता है। सूक्ष्म रूप से परमात्मा हमारे साथ है इसका अनुभव होने लगता है। हमारा तन भाइयों का परिवार है। तीनों की युगल, उनके बच्चे मालाजी सभी इस ज्ञान में चलते हैं। मेरी जो भतीजी है वो अभी समर्पित हुई है और इसके साथ-साथ जो हमारे रिलेशन में हैं उसमें भी लगभग अधिकतर लोग ज्ञान में चलते हैं। छोटे-मोटे टकराव तो चलते रहते हैं लेकिन ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण उनको समझाते हैं तो फिर सब सेट हो जाता है, खींचातानी नहीं होती और ज्यादा टकराव जैसी बातें नहीं होती हैं। जब मैं नया-नया ज्ञान में आया तो मैंने मधुवन में बहुत कुछ सीखा, मधुवन में जिस प्रकार एडमिनिस्ट्रेशन चलता था, कोई भी प्रोग्राम होता था तो उसकी तैयारियाँ ये सब इंटरनेशनल लेवल पर होने के कारण हम उसका प्रोफेशन में हो, परिवार में हो, परिवार के कोई कार्यक्रमों में हो, सामाजिक कार्यक्रम में हो उपयोग करते हैं और अच्छी तरह से उसका उपयोग होता है उसका रिजल्ट भी बहुत अच्छा आता है। मेरा प्रोफेशन ऐसा है कि इसमें जितना भी आगे जाना है तो बहुत स्कोप है लेकिन एक बार अपना दायरा फिक्स हो गया और सब लोगों को मालूम हो गया जैसे खान-पान की बात आती है तो जब हमारी पार्टियाँ होती हैं लेकिन लोगों को मालूम हो गया कि ये क्या खाते हैं तो शुरु-शुरु में तो थोड़ी तकलीफ होती है लेकिन बाद में वे ध्यान देने लगते हैं। जब मैं यहाँ आया था तो मेरी आर्थिक स्थिति थोड़ी डाउन थी उस समय मैं मधुवन

आने की स्थिति में भी नहीं था, मेरे दोस्त ने मुझे सहयोग दिया इसलिए मैं आया लेकिन जो विकास हुआ उसकी खुशी मुझे तब हुई जब मैंने बिजनेस कॉन्फ्रेंस में दो सौ लोगों को लेके आया था मधुवन में कि ये बाबा का रिटर्न है, इस प्रकार प्रोफेशनल लाइफ में विकास होता गया। इस ज्ञान का मैंने दो तरीके से अध्ययन किया है एक भावना तो है ही लेकिन भावना के साथ-साथ मैंने वैज्ञानिक लॉर पर इसके प्रभाव का निरीक्षण किया है। जब हम मेंडिटेशन में बैठते हैं और जब एकाग्र होते हैं बाबा की शक्तियाँ मिलती हैं, इसका फिजिकल प्रभाव हमारे शरीर पर क्या होता है क्या बदलाव आते हैं और वो बदलाव फिर प्रैक्टिकली धीरे-धीरे किस प्रकार डेवलप होते जाते हैं इसका अनुभव मैं हमेशा करता था। इस कारण मेरी मेंडिटेशन में रुचि बढ़ती गयी और इसमें मुझे ज्यादा मदद शुरु-शुरु में दादी जानकी जी के क्लासेस से

मिली। उनको बहुत प्रैक्टिकल छोटी-छोटी क्लासेस होती थी जो बहुत आसानी से समझ में आती थी लेकिन उसको प्रैक्टिकल करने समय ऐसा लगता था कि तपस्या है और तपस्या कोई ऐसे बैठ के नहीं है बल्कि हर एक चीज को प्रैक्टिकल लाइफ में लाना यही सबसे बड़ी तपस्या है ऐसा मुझे अनुभव होता था। विवेक जो कि गोपाल किशन के सुपुत्र हैं उनसे बाबू हुईं में उन्होंने बताया कि -

जब आप पापा के साथ कार्य करते हो तो आपको कैसा लगता है कि हमारा बाबू ही स्वयं फादर है तो आपको कहीं कोई कठिनाई की बात नहीं लगती?

उत्तर: बिल्कुल नहीं, काफी फर्क पड़ता है अगर सिनियर भर में है उसी सेम प्रोफेशन में तो एक अच्छा बैकिंग रहता है तो उसको वजह से काफी सारी जो चीजें रहती हैं हमारे प्रोफेशन में कामप्लिकेटेड चीजें जब रहती हैं तो एक मेंटल सपोर्ट रहता है। जिस तरह लौकिक पिता का सपोर्ट है वैसे ही अलौकिक पिता का भी सपोर्ट है तो काफी सरल हो जाता है।

प्रश्न- आपको इस पढ़ाई में कैसे आये क्योंकि आप तो कुछ और करना चाहते थे?

उत्तर: जब मैं सी.ए. फाइनेल में था तो तम मुझे ज्ञान पता था जिससे पढ़ाई में भी हमें मदद होती थी। कभी हम टेन्शन में रहते थे तो कुछ परमात्मा के ज्ञान से सोल्वेशन मिल जाता है। मेंडिटेशन द्वारा और तब से मुझे ऐसा लगने लगा कि मैंने सी.ए. का फोल्ड चुनकर सही किया है ताकि मुझे काफी समय मिलेगा सेवा और मेंडिटेशन के लिए क्योंकि सी.ए. और मेंडिकल लाइन में एक फर्क है कि वहाँ डॉक्टर को चीबीस घंटे खुद रहना पड़ता है लेकिन सी.ए. स्टाफ के द्वारा काम मैनेज कर सकता है। फिर जो एक्सट्रा समय मिलता है वो हमलोग फिर सेवाओं में देते हैं।

प्रश्न- मेंडिटेशन से आपको इस प्रोफेशन में क्या लाभ मिला?

उत्तर: मेंडिटेशन से मेरी विल पावर और डिटरमिनेशन पावर बढ़ी और सेवाओं में मुझे इसका बहुत फायदा होता है। हमेशा हम देखते हैं कि सेवा का कोई भी प्लेन करें, संकल्प करें वो परमात्मा जरूर पूरा करवाता है।

प्रश्न- इतने बड़े परिवार में इतने सारे लोगों के साथ आप काम करते हैं तो उसमें आपको कभी उतार-चढ़ाव या स्वभाव-बर्कार में कभी ऊँचा-नीचा नहीं फील होता है?

उत्तर: ये तो परिवार है हमारा और परिवार में तो लगभग सभी सदस्य ज्ञान में हैं तो इतनी ज्यादा कठिनाइयाँ तो हमें नहीं झेलनी पड़ती हैं लेकिन इसके अलावा हमने एक संस्था बनाई है यतना एम्बर फाउंडेशन नाम से अभी दो साल से और उसमें मैंने 80 लोगों को जोड़ा है और उसके द्वारा हम काफी सेवाओं के प्लेन बनाते रहते हैं जैसे व्यसन मुक्ति का कार्य करते हैं, बच्चों के लिए संस्कार शिविर, सेल्फ एम्बरमेंट तो ये सेवाएं करते समय भी मुझे कई लोगों को हैडल करना पड़ता है। सब कुछ करते समय लोगों के संस्कार अलग होने के कारण ऊपर-नीचे थोड़ा होता है लेकिन ज्यादा दिक्कत नहीं आती है क्योंकि राजयोग के ज्ञान में हर बात का साल्वेशन है।



आणंद-गुज. 'कर्मयोगी तालीम' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गीता, चीफ ऑफिसर पंजब बारीट, पूर्व नायब सचिव गुजरात सरकार सी.एम. गोविलक एवं नगरपालिका उपप्रमुख हंसा बहन।



बुरला। सन्मलपुर के सांसद नागेंद्र प्रधान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेहा। साथ है पूर्व सांसद प्रमिला बहिनद व अन्य।



सापुरता। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित नवोदय विद्यालय समिति पुणे डिवीजन के असिस्टेंट कमिश्नर पी.वी. यान राजू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भागु।



ज्वारा। डी.आई. तापी ऑफिसर रणजित सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रंजन।



संगम तीर्थ-बैंगलोर। 'दिव्य संस्कृति सभ्यता' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध अभिनेत्री सोवकर जानकी, ब्र.कु.गणेश, गायिका हेमा प्रसाद, दादी सरला, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. वीणा तथा भारतीय फिल्म के प्लेबैक सिंगर जमुना रानी।



इटावा-उ.प्र. कार्यक्रम के दौरान उपस्थित डॉ वियन, एन.एन. यादव, आर.एम. रोडवेज, ब्र.कु. नीलम, एस.पी.सिंह,एस.एम. रोडवेज तथा अन्य।

“नारी शक्ति ही समाज परिवर्तन का अग्रदूत बने” – कृष्णा प्रसाद

परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन के विषय पर विशाल कार्यक्रम



कृष्णा प्रसाद अपने विचार व्यक्त करते हुए। मंच पर ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. ब्रजमोहन।

नई दिल्ली। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा “नारी के सम्मान और प्रतिष्ठा की पुनः स्थापना” के ऊपर त्यागराज स्टेडियम सार्वजनिक कार्यक्रम हुआ। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा चलाये जा रहे ‘परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय अब’ अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना के अन्तर्गत आयोजित इस सार्वजनिक कार्यक्रम को कई गणमान्य व्यक्तियों ने सम्बोधित किया। भारत में स्थित नेपाल के राजदूत कृष्णा प्रसाद डकाल ने विशिष्ट अतिथि के रूप

में सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि नारी के सम्मान एवं प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने के लिए समाज में प्रचलित रूढ़िवाद, नकारात्मक मान्यताओं एवं दूषित मानसिकताओं को बदलना होगा जिसके लिए महिलाओं को आगे आना होगा। क्योंकि समाज परिवर्तन का केन्द्र बिन्दु नारी ही है। कार्यक्रम को अध्यक्ष एवं मुख्य संयोजक ब्र.कु. गीता ने अपने आशीर्षचन में कहा कि समाज में फैले हुए व्यवहार, भ्रष्टाचार एवं बुराइयों का मूल कारण है हमारी भोग वासना, भौतिकता एवं

कर्मन्त्रियों की अधीनता। उन्होंने कहा कि इस अधीनता से मुक्त हो स्वयं और समाज में नैतिकता, सकारात्मकता एवं सुख-शांति लाने के लिए हमें आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग का नियमित अभ्यास करना होगा। इस कार्यक्रम के प्रायोजक संस्था इंजीनियर्स इण्डिया लि. के अध्यक्ष श्री ए.के. पुरुवाह ने अपनी शुभकामनायें व्यक्त करते हुए कहा कि लोगों में खासकर महिलाओं में आन्तरिक शक्ति एवं क्षमताओं को बढ़ाने से ही समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस दिशा में ब्रह्माकुमारी संस्था निरन्तर कार्यरत है। इस कार्यक्रम के सह प्रायोजक गैस अर्थोर्टी ऑफ इण्डिया लि. के मानव संसाधन निदेशक श्री आर.रविन्द्रन ने भी इस अवसर पर कहा कि लोगों के व्यक्तिगत, व्यावसायिक एवं सामाजिक जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण जरूरी है। नारी सम्मान की पुनः स्थापना के



कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए ग्रेसी सिंह व उनके युग के कलाकार। ऊपर एक पैनाल डिस्कशन भी रखा गया जिसमें पंजाब विश्वविद्यालय के महिला विकास केन्द्र की मुखिया पाम राजपूत बहन, दिल्ली एवं चण्डीगढ़ के मुख्य चुनाव आयुक्त राकेश मेहता, प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. अवधेश, ब्रह्माकुमारी संस्था को निदेशिका ब्र.कु. आशा आदि ने अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य प्रवक्ता राजयोगी ब्रह्माकुमार ब्रजमोहन ने ‘परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय अब’ परियोजना के ऊपर प्रकाश डाला तथा प्रसिद्ध आध्यात्मिक वक्ता ब्र.कु. शिवानी ने

पारिवारिक मूल्यों के ऊपर प्रेरणादायी प्रवचन दिये। ब्रह्माकुमारी संस्था की रशिया के सेवकिकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. चक्रधारी ने सभा में उपस्थित लोगों को सामूहिक राजयोग के अभ्यास के द्वारा मन की सच्ची शान्ति की अनुभूती करायी। कार्यक्रम के अन्त में प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेत्री ग्रेसी सिंह और उनके युग ने शिव शक्ति विषय पर एक चित्त आकर्षक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की तथा कार्यक्रम के आरम्भ में स्कूल के बच्चों ने स्वगत नृत्य द्वारा उपस्थित जन समूह को आत्म विभोर किया।

सफल जीवन की मार्गदर्शक है आध्यात्मिकता - ब्र.कु. मनोरमा



सिरसा। कार्यक्रम के पश्चात् मखन लाल सिंगला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मनोरमा। साथ है ब्र.कु. बिन्दु तथा अन्य।

सिरसा (शांति सरोवर)। भौतिक साधनों को प्राप्त करे बाद भी मानव मन असंतुष्टता का अनुभव करता है क्योंकि मन की यथार्थ इच्छा तो सच्ची शान्ति व आनंद की प्राप्ति ही है। जीवन में बाकी कार्य करने के साथ ही आत्मोन्नति के लिए भी अवश्य समय निकालना चाहिए। उक्त विचार सिरसा के जिला एवं सत्र न्यायाधीश कुलदीप जैन ने ब्रह्माकुमारी द्वारा ‘शांत मन - आनंदमय जीवन’ विषय पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आधुनिकता की चकाचौंध व

भागदौड़ से भरे जीवन में आध्यात्मिकता ही हमारा सही मार्गदर्शक है, जिससे हमें सफल जीवन का अनुभव हो सकता है। इस अवसर पर अति.जिला एवं सत्र न्यायाधीश आर.पी.गोयल, सी.जे.एफ. बलवंत सिंह भी उपस्थित थे। चार दिन तक चले कार्यक्रम में विधायक मखन लाल सिंगला, एस.डी.एम. परमजीत चहल, पद्म जैन, भूशर मेहता ने भी विशेष रूप से शिरकत की। शिविर की मुख्य वक्ता ब्र.कु. मनोरमा ने कहा कि ईमान से अधिकांश सुंदर कोई चीज भगवान के बगोचे में नहीं है, फिर

भी व्यक्ति अप्राप्ति और लोभ के भाव में जी रहा है जिसका मूल कारण है कि वह दो मिन्ट भी स्वयं से नहीं मिलता, उसका सारा समय दुनिया के लोगों से मिलने व उनका हाल जानने में ही व्यतीत हो रहा है। जब हम एकान्त में बैठकर अपने भीतर झांकते हैं तो हमारा अन्तर्मन हमसे ही रही गलतियों के बारे में सवाल पूछता है, जिससे हमें घबराहट व अशांति का महसूसता होती है। मन को शांति व आनंद की अनुभूति करने के लिए अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनें और आध्यात्मिकता के माध्यम से

आत्मा के मूल गुणों का विकास करें। उन्होंने ‘एकाम्रता की शक्ति अपने पहुंच के अंदर’ विषय पर समझाते हुए कहा कि अपनी एकाग्रता को मजबूत करने के लिए हमें अर्जुन और लक्ष्मण बना पड़ेगा तब ही अपने लक्ष्य रूपी मणि को हासिल किया जा सकता है। ब्र.कु.बिन्दु ने कहा कि पर, पैसा और ख्याति प्राप्त करके भी मनुष्य स्वयं को अंदर से खाली अनुभव कर रहा है। अशांत मन ही उसे भरपूरता का अनुभव नहीं करने दे रहा। आत्म-मंथन व आत्म-निरीक्षण के द्वारा ही हम स्वयं को

सशक्त बनाकर परिस्थितियों से मन को अप्रभावित रख सकते हैं। ‘श्रेष्ठ समाज के निर्माण में धर्म के रहनुमाओं की भूमिका’ विषय पर भी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें शहर के सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अलावा वाह जिन्दगी वाह, हर पल खुशी का राज, जीवन जीने का सही अंदाज, सकारात्मक-सशक्त एवं समर्थ विचारधारा और सम्बन्धों में मधुरता आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया।

कार्यालय- आम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारी, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स नं.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क ‘ओमशान्ति मीडिया’ के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 16th Nov 2014
संपादक: ब्र.कु. गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारी मीडिया प्रभाग (आर.ई. आ.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी. प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।